विद्रोही बसात

विद्रोही बसात

(मैथिली कविता-संग्रह)

रामकृष्ण परार्थी

नवारम्भ
मधुबनी/पटना/दिल्ली

ऑनलाइन बुक स्टोर **www.navarambh.com** पर पुस्तक उपलब्ध।

ISBN : 978-93-95420-92-1

विद्रोही बसात
(मैथिली कविता-संग्रह)

© रामकृष्ण परार्थी

प्रथम संस्करण : 2024
मूल्य : 200/-

आवरण : साभार

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-5
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार-847211
पटना : 63, एम.आई.जी., हनुमान नगर, पिन-800020
दिल्ली एनसीआर : प्लॉट एच. एस.-2, ब्लॉक एफ
सेक्टर-अल्फा-2, ग्रेटर नोएडा-201308
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Vidrohi Basat
A Collection Of Maithili Poems by Ramkrishna Prarthi
First Edition : 2024, Price : 200/-

मैथिली भाषा-भाषी क्षेत्रमे
रैदास, कबीर, गुरु नानक, फूले पेरियार
आ बाबा साहेब अम्बेडकर समेत
समतामूलक समाज बनेबाक आग्रही
समस्त मनीषी लोकनिक विचारक प्रसारमे लागल
ज्ञात-अज्ञात सामाजिक योद्धा लोकनि
कें
समर्पित।

कविता-क्रम

17 : धिक्कार अछि, धिक्कार
18 : समाजक गद्दार नहि छी
19 : समझौता नहि अछि स्वीकार
20 : दुविधा
21 : हम नहि कहि सकैत छी...
23 : यौ अतीतजीवीजी
25 : नामक भ्रम
27 : जारी रहत विरोध
29 : हौ तुलसीदास
31 : अपन मुरेठा जिंदाबाद
32 : प्रगतिशील साहित्यकार
33 : ब्राह्मणवादक परित्याग
35 : जरूरी छैक पढ़ब संविधान
37 : हम विधर्मीए ठीक छी
39 : विद्रोही बसात
40 : भाषाक प्रति छद्म अनुराग
42 : भावक दवाइ
43 : फूसि पर गुमान
46 : हौ भाइ बोधराज-1
47 : हौ भाइ बोधराज-2
49 : हम नहि मानैत छी पितृपक्ष
51 : गाँधीजीक बानर
52 : ओकरा नहि छैक अपना पर...
53 : चाहक दोकान पर दलित-विमर्श
55 : अपना देशक संसद
56 : पथिक छी
58 : कायरक बस्ती
59 : अपना लोकसँ दूर छी हम

हम स्वयंकेँ भुला गेल छी : 60
हत्यारा बनल भगवान : 62
धन्यवाद लार्ड मैकाले : 64
बस! आब बहुत भेल : 66
लड़ैत रहब लड़ाइ : 68
पूर्णिमाक चान : 70
बौआ तोँ हार नहि : 72
कतय जा रहल अछि... : 73
मनुक्ख बनबाक प्रयास : 76
भुला गेल छी हम : 78
गाम अपन एतेक.. : 79
अपन गाम चल रौ मीता : 80
स्वांतः सुखाय : 81
जागै जाइ जा हौ : 82
षड़यंत्र : 84
जिबैत व्यक्ति : 86
यै, सुनू प्रिय : 87
हमरा गामक बरमोतरक... : 88
अर्थक अनर्थ : 90
91 : हमर इच्छा
92 : ई कविता लेल...
94 : कोरा बकवास
95 : हम मानव छी मानवता...
96 : जय भीम
98 : खतरा अबस्स छैक
99 : हम नहि पूजैत छी...
100 : ई चुप रहब ठीक...
101 : चलल जा रहल छी...
103 : बेटाक लेल
104 : धर्मक धन्धा
105 : उधारक धर्म-संस्कृति
107 : चलिहेँ बौआ बाबा...
108 : जातिगत जनगणना
109 : मैथिली
110 : डरे डेरायब नहि
111 : झाझा एक्सप्रेस
112 : ओ एक नम्बरक...

दलित-चेतनाक जमीन तैयार करैत कविता

मैथिली कविता लेल ई सुखद अनुभूति छै जे आब एहिमे स्वानुभूतिपरक दलित-जीवनक यथार्थ चेतना-सम्पृक्त तेवर आ त्वरा अभिव्यक्त भ' रहल अछि। एहि तेवरक प्रमुख हस्ताक्षरक रूपमे रामकृष्ण परार्थी सन कवि लगातार वर्ण, जाति आ रूढ़िक परती-परांठकेँ तोड़ि रहल छथि, पाठककेँ ठकमुरिया लगा रहल छथि। निःसन्देह एहि तेवरक कविताकेँ पचेबाक क्षमता बहुतो तथाकथित प्रगतिशील लेखक-पाठक लेल सेहो कठिन, तेँ विरोध स्वरूप आह-वाह अथवा गबदी मारब सेहो सम्भव अछि।

भारतीय साहित्यमे दलित-साहित्यक आरम्भ सर्वप्रथम मराठी साहित्यमे भेल। मराठीक प्रसिद्ध दलित रचनाकार शरण कुमार लिंबाले आ हिन्दीक ओमप्रकाश बाल्मीकि अपन पोथी 'दलित साहित्यक सौन्दर्यशास्त्र'मे एहि बात पर जोर देलनि अछि जे दलित अर्थात अनुसूचित जातिमे उत्पन्न व्यक्ति (जे समाजमे अस्पृश्यताक दंश झेलैत अछि) द्वारा लिखल गेल साहित्येटा 'दलित-साहित्य' थिक। एहनामे 'दलित-चेतना' आ 'दलित-संवेदना', स्वानुभूति आ सहानुभूति सन शब्दक प्रयोग दलित-साहित्य लेल प्रचलित भेल। निःसन्देह मैथिली-कवितामे बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' आ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'सन रचनाकार दलित-बहुजनकेँ अपन कविताक परिधिमे आनैत छथि मुदा से लेखन स्वानुभूतिपरक छल जकर ऐतिहासिक क्रममे परम्पराक निर्माणमे अपन महत्त्व छै। एहि अर्थमे 'जूगल कामति आ छीतन खबास'क (वर्गक) पढ़बा-गुनबाक लेल यात्रीक सदिच्छासँ ल' क' 'घसल अठन्नी'मे खेत-मजदूर 'बुचनी' पर पड़यबला जमीन्दारक बेंतसँ उपजैत 'मधुप'क आक्रोश धरि, पहिल बेर मैथिली-कवितामे स्त्रीक संग दलित-बहुजन लेल दया, माया आ वर्ण आधारित शोषणक प्रति आक्रोश देखल गेल। एवंप्रकारें देखल जाय त' मैथिली कवितामे बीसम शताब्दीक मध्यसँ अंत धरि दलित-बहुजन लेल सहानुभूति आ संवेदनापरक आह बहराइत रहल जे दलित-चेतनाक निर्माणमे पृष्ठभूमि निर्माणक काज केलक। एहि शताब्दीक आरम्भमे तारानन्द वियोगीक कविता 'बाभनक गाम' एहि संदर्भमे एकटा

बिरड़ो ल' क' आयल आ मीलक पाथर साबित भेल। ई आक्रोश पहिल बेर मैथिली कवितामे देखल गेल तेँ बहुतोकेँ कहाँ अरघलनि!

दलित-साहित्यक मूलमे 'वर्ण' आ 'जाति' आधारित व्यवस्थाक विरोध अछि जे समाजक एक टा पैघ वर्गकेँ शिक्षा आ स्ववंत्रतासँ वंचित क' अस्पृश्य, गुलाम आ बंधुआ मजूर बनाक' राखलक। जेंकि एहि तरहक जाति-आधारित कर्मक सैद्धांतिकी ब्राह्मण समुदाय द्वारा मनुस्मृति आ अन्य धार्मिक संहिता सभमे गढ़ल गेल तेँ एकरा ब्राह्मणवाद अथवा मनुवाद सेहो कहल जाइत अछि। संयोगसँ जाति आ जेंडर आधारित शोषण-उत्पीड़न लेल यैह ब्राह्मणवाद आकि मनुवाद जिम्मेवार मानल गेल, तेँ स्त्री आ दलित लेखनमे एहि अवैज्ञानिक 'वाद' पर बेर-बेर प्रहार कयल जाइत अछि। बुद्ध, कबीर, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले, रामास्वामी पेरियार आ बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकरक वैचारिकता, दलित-साहित्यक आधार मानल जाइत अछि। मैथिलीमे चेतना आधारित स्त्री अथवा दलित लेखन नव बात थिक तेँ 'पितृसत्ता' अथवा 'ब्राह्मणवाद' सन शब्दक प्रयोग देखिते किछु तथाकथित प्रगतिशील लेखक-बुद्धिजीवी लोकक नुकायल जनउसँ ब्राह्मणवादक मैल बरबराक' बहरा जाइत अछि। एही मानसिक-पीबकेँ 'ब्राह्मणवाद' अथवा 'मनुवाद' कहल जाइत अछि जकर शिकार आइ-काल्हि दलित-बहुजन आ स्त्री कम नहि। तेँ मैथिलीमे चेतनापरक दलित आ स्त्री लेखनक प्रासंगिकता आरो बढ़ि जाइत अछि। जे समाज अपन बहु-बेटीकेँ सती, विधवा, बालिका-विवाह, बेमेल-विवाह आदिक रूढ़िमे जकड़िक' ओकरा ऊपर अमानवीय हिंसा करैत रहल ताहि 'विश्वगुरुक संतान' लेल 'पितृसत्ता' आकि 'वर्ण-व्यवस्था' शब्दकेँ देखिते बिलबिलायब स्वाभाविक अछि। एहेन छद्म प्रगतिशीलता अथवा समाज-सुधारक प्रसंगमे डॉ. अंबेडकरक लेख 'जातिप्रथा-उन्मूलन'केँ देखल जयबाक चाही। 'लाहौर जातपात तोड़क मंडल' अपन 1936क वार्षिक सम्मेलन लेल डॉ. भीमराव अम्बेडकरकेँ व्याख्यान देब' लेल आमंत्रित केलक मुदा हुनकर लिखित भाषणकेँ स्वागत समिति द्वारा एहि आधार पर पढ़बासँ मना क' देल गेल जे भाषणमे व्यक्त विचार सम्मेलनक लेल असहनीय होयत। निःसन्देह 'जातपात तोड़क मंडल'क कमंडलमे झाँपल मनुवाद देखार भ' गेल। अपन एहि भाषणमे डॉ. अम्बेडकर लिखैत छथि— 'हिन्दूकेँ ई पढ़ायल जाइत अछि जे ब्राह्मण भूदेव छथि— वर्णानां

ब्राह्मणो गुरु'। हिन्दूकेँ इहो पढ़ायल जाइत अछि जे हुनकर शिक्षक मात्र ब्राह्मणेटा भ' सकैत अछि। मनु कहने छथि, 'यदि ई पूछल जाय जे धर्मक ओहि विषयमे की कयल जाय, जकर विशेष रूपेँ धर्म-ग्रंथमे उल्लेख नहि कयल गेल अछि, त' तकर उत्तर ई अछि जे शिष्ट ब्राह्मण ओहि संदर्भमे जे कहि देताह, सैह विधिमान्य होयत—

अनाम्नातेषु धर्मेषु कथं स्यादिति चेद्भवेत्।
यं शिष्टा ब्राह्मण ब्रुयुः सधर्मः स्यादशङ्कितः॥

जत' एहेन बुद्धिजीवी वर्ग अछि, जे शेष हिन्दू समाज पर नियंत्रण रखने अछि, जे जाति-व्यवस्थामे सुधार करबाक विरोधी अछि, तेँ हमरा जाति प्रथा समाप्त कर'बला आंदोलन सफल होयब नितांत असम्भव बुझाइत अछि। (बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय, खंड-1)

एहनामे बिना मनुवाद पर प्रश्नचिन्ह ठाढ़ कयने की दलित-चेतनाक साहित्य लिखल जा सकैत अछि? देखल जाय त' कविक ई उद्बोधन डॉ. अम्बेडकरक वैचारिकीक विस्तार थिक, 'कियो फुसि बजैत छह/ जे जाति आ वर्णक कर्म छैक आधार/ ई त' जनमिते सटि जाइत छैक मनुक्खक कपार।'

भारतीय दलित-साहित्यक मूल आधार डॉ. अम्बेडकरक वैचारिकी छै से रामकृष्ण परार्थीक कवितामे कूटि-कूटिक' भरल छनि। तेँ हिनकर कविताक मूलमे दलित समाजकेँ जगेबाक आह्वान, चेतनामूलक तार्किकताक संग ओहि सभ रूढ़ि आकि संस्कृतिक प्रति 'नकार' आ आक्रोश जे मनुष्य-मनुष्यक बीच जन्मक आधार पर ऊँच-नीचक देबाल ठाढ़ करैत अछि, मनुवादक विरोधक संग सांप्रदायिकता आ सभ प्रकारक शोषण-उत्पीड़नक विरुद्ध आक्रोश आदि देखल जा सकैत अछि। एहि संग्रहक पहिले कवितामे परार्थी डॉ. अम्बेडकरक कथनकेँ मोन पाड़ैत दलित-समाजक अंतर्विरोधकेँ सेहो सोझाँ अनैत छथि— 'एहने स्वार्थी लोक लेल कहने रहथिन बाबा भीम/ अनपढ़ लोक नहि अछि समस्या हमरा समाज लेल/ समस्या त' अछि ओ पढ़ल-लिखल लोक/जे गलतकेँ सही कहबामे क' रहल अछि/ अपन बुद्धिक उपयोग'। साहित्यमे जे साँस्कृतिक चिह्न सामाजसँ लेल जाइत अछि ओहि पर वर्चस्ववादी संस्कृति हाबी रहैत अछि। जेना कि पाग-दोपटा एकटा खास जाति/वर्गक सांस्कृतिक चिह्न रहल अछि, जखन कि मुरेठा सम्पूर्ण श्रमशील

उत्पादक समाजक, तेँ परार्थी मुरेठा-संस्कृतिकेँ अपनेबाक लेल आह्वान करैत छथि जे प्रतिरोधक सेहो प्रतीक थिक।

डॉ. अम्बेडकर कहने छथि जे 'ओ धन्य छथि जे अनुभव करैत छथि जे जाहि लोकमे हमर जन्म भेल अछि, तकर उद्धार करब हमर कर्तव्य अछि। धन्य छथि ओ सभ, जे गुलामीकेँ खत्म करबाक लेल सभकिछु न्योछावर क' दैत छथि, आ धन्य ओ छथि जे सुख आ दुख, मान आ सम्मान, कष्ट आ कठिनाइ, आँधी आ तूफानक परवाहि केने बिना ताधरि संघर्ष करैत रहताह, जाधरि अस्पृश्य वर्गकेँ हुनकर मानवीय जन्मसिद्ध अधिकार नहि भेटि जाइनि।' कवि रामकृष्ण परार्थी डॉ. अम्बेडकरक एहि कथन पर चलैत, अपना बादो एहि संघर्ष आ प्रतिरोधकेँ पीढ़ी दर पीढ़ी जारी रहबाक बात कहैत छथि—

'अहाँ कहबै स्वर्ग-नर्क
ओ कहत बकवास
अहाँ कहबै पुनर्जन्म
ओ कहत अन्धविश्वास
अहाँ कहबै भगवान
ओ कहत विज्ञान
अहाँ चलबै दक्षिण
ओ चलत बाम
बिनु प्रमाणकेँ ओ नहि मानत
अहाँक एकहु टा गप!'

परार्थीक काव्य-चेतनाक मूलमे अम्बेडकरवाद छनि तेँ ओ जतेक वर्ण-आधारित भेदभाव, दलन आदिक लेल मनुवाद आ मनुवादी मानसिकतासँ ग्रस्त सवर्ण समाजक जतेक आलोचना करैत छथि, ओतबे दलित समाजमे व्याप्त मनुवादसँ मुक्तिक लेल आह्वान सेहो। हुनकर कविताकेँ आत्मालोचनक ई प्रवृत्ति विशिष्ट बना दैत अछि। एहि संग्रहक अनेक कवितामे कवि ब्राह्मणवादक सांस्कृतिक-चिह्नसँ मुक्ति पयबाक लेल दलित समाजसँ आह्वान करैत छथि, 'ब्राह्मणवाद माने साफे बुझह अन्हरजाल/ एहिमे नहि सुझतह अपन हक-अधिकार/ एहिमे नहि औतह स्वतंत्र विचार/ ई भाग्य-भगवान, स्वर्ग-नर्क आ/ पुनर्जन्ममे ओझराक'/नहि होबय देतह हमरा-तोरा

सभकेँ/ सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक विकास।' तेँ कवि एहि अन्हरजालसँ मुक्तिक लेल दलित-समाजसँ बेर-बेर संविधान पढ़बाक आह्वान करैत छथि, जाहि कारणे हुनकर जीवनमे स्वतंत्रताक संग सामाजिक आ आर्थिक सम्पन्नता आयल अछि आ भविष्योमे आओत– 'हौ भाइ बोधू/ई वेद-पुराण पढ़लासँ नहि मिलतह/अपना सभक समस्याक समाधान/अपना सभक सामाजिक-आर्थिक उत्थान लेल/अपना हक-अधिकारक ज्ञान लेल/अपना सभक बाल-बुतरुक कल्याण लेल/जरूरी छैक पढ़ब भारतीय संविधान/ तखने मिलतह समाजमे उचित स्थान/दलित-शोषण, अत्याचार पर भगवान नहि/एकमात्र संविधान लगा सकैछ लगाम।'

साम्प्रदायिकताकेँ कवि बहुलतावादी संस्कृति आ भाइचारा लेल सभसँ पैघ खतरा मानैत छथि। एहि क्रममे ओहेन दलित नेताक सेहो आलोचना करैत छथि जे अपन राजनीतिक स्वार्थ लेल राष्ट्रवादक नाम पर ब्राह्मणवादक गुणगान करबामे व्यस्त छथि। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ठीके कहने छथि जे 'सही राष्ट्रवाद थिक जाति-भावनाक परित्याग आ जाति-भावना गहन साम्प्रदायिकताक रूप थिक।' परार्थी साम्प्रदायिक दंगामे दलित-बहुजनक हसेड़ीक रूपमे उपयोगकेँ रेखांकित करैत छथि– 'ओकरे हाथमे थमा देल जाइत छै 'धर्मक धूजा' आ 'ओकरे पर लगाओल जाइत छैक हत्याक आरोप।' एहि क्रममे ओ सांस्कृतिक राष्ट्रवादक नाम पर देशमे पसारल जाइबला साम्प्रदायिक नफरत दिस सेहो बेर-बेर इशारा करैत छथि, 'देश नहि छैक खतरामे/आ ने खतरामे छैक हिन्नू-मुसलमान/...जाति-पाति, पंथ-सम्प्रदाय/पहिनेसँ मजगूत स्थितिमे छैक/आ आइयो देशमे खूब नीकसँ मनाओल जाइत छैक/ होली आ रमजान/...खतरा अबस्स छैक/शिक्षा, रोजी-रोजगार पर/आम आदमीक हक-अधिकार पर/खतरा छैक मानवता पर/प्रेम-भाइचाराबला आपसी रिश्ता पर/खतरा छैक भारतीय संविधान पर'।

ई देखल गेल अछि जे दलित रचनाकार आ बुद्धिजीवी अपन जातीय पहिचानसँ बचबाक लेल शहरमे बसबाक आग्रही होइत छथि मुदा परार्थी गामकेँ त्यागबाक बदला गामकेँ बदलबाक आग्रही छथि। कवि यात्रीक प्रसिद्ध कविता 'माँ मिथिले अंतिम प्रणाम'सँ ओ असहमति जतबैत मातृभूमि आ मातृभाषा संगे अपन आबद्धताक घोषणा करैत गाममे समता

आ बंधुत्वक स्थापना लेल प्रतिबद्धताक घोषणा करैत छथि— 'हमर कर्तव्य अछि जे करी अहाँक विकास/अहाँकेँ पाखंड, आडंबर आ/अंधविश्वासक गुज अन्हारसँ निकालबाक लेल/देखबी पुनर्जागरणक प्रकाश/ हम नहि देखि सकैत छी जे/कोनो जाति आकि क्षेत्र विशेषक लोक/अहाँकेँ बनौने रहय अपन गुलाम/हम नहि कहि सकैत छी/अहाँकेँ अंतिम प्रणाम!'

कवि रामकृष्ण परार्थी 'विद्रोही बसातक' आग्रही छथि आ से मनुक्खक उद्धार लेल, अपनो मनुक्ख बनल रहबाक लेल। ईर्ष्या-द्वेष, छल-प्रपंचसँ बाहर निकलबाक लेल, जे रस्ता बुद्ध, कबीर, रविदास, फुले, पेरियार आ अम्बेडकरक देखाओल अछि ताहि पर समाजकेँ चलेबाक लेल। तेँ हुनकर विद्रोह अहिंसात्मक छनि, हुनकर प्रतिबद्धता छनि जे 'विध्वंशक विरोधमे सदति बुद्ध बनि/ ठाढ़ रहय हमर कविता।' तेँ हुनकर 'विद्रोही बसात' भेदभावरहित समाजक स्थापना आ संघर्षक इतिहासकेँ मोन राखबाक लेल छनि— 'लोकक तीव्र विरोध आ प्रतिरोधक बावजूदो/ हम रोपि रहल छी क्रांतिक गाछ/एहि गाछकेँ सींचि रहल छी/अपना शोणित-पसेनासँ/द' रहल छी एहिमे/ नित नव विचारक खाद/ एहि उम्मेदक संग/ जे ई गाछ हमर आबयबला पीढ़ीकेँ/ कहतैक हमर संघर्षक इतिहास'। बिना प्रेममे डूबने क्रांति संभव नहि। ई डूबव मानवतासँ आगाँ जीव मात्र लेल प्रेमकेँ विस्तार दैत अछि। प्रेम-मे डुबए बला व्यक्ति संसारमे समानताक सपना देखि सकैत अछि। परार्थीक कवितामे जीवनक सभटा रंग मौजूद अछि। प्रकृति-प्रेम, दाम्पत्य-प्रेम आदिक अनेक बिम्ब एत' देखल जा सकैत अछि। कवि अपन कवितामे बाध-बोनक माटिक सोन्हगर सुगन्धिमे लपेटल किसान-मजदूरक पसेनाक गंधक संग, सगतोड़नी आ घसबहिनीक चर्च अपन कवितामे आन' चाहैत छथि।

परार्थी छद्म बौद्धिकताकेँ अपन कवितामे बेर-बेर आलोचना करैत छथि। स्त्री आ दलितकेँ मानवोचित अधिकारसँ वंचित क' गुलाम बनाब'मे मनुस्मृति सन ग्रंथक मुख्य भूमिका रहल अछि। तेँ स्त्री-विमर्श आ दलित विमर्शमे मुख्य रूपेँ मनुवादक आलोचना कयल जाइत अछि जे ब्राह्मण स्त्रियोकेँ शूद्र कोटिमे राखलक। मुदा वर्तमान स्त्री-लेखनमे ई चेतना बहुत कम देखल जाइत अछि। एहि संदर्भमे परार्थीक कविता 'दुविधा' विशेष रूपेँ उल्लेखनीय अछि जे 'ब्राह्मणवादक परिधिमे रहि स्त्री-विमर्श पर लिखल

जाइत कविता' पर तंज करैत अछि– 'विरोधाभाससँ भरल छनि हुनकर स्वभाव/ स्त्री स्वतंत्रताक प्रबल विरोधी मनु महराजक/ विरोधमे नहि फुजैत छनि हुनकर बकार/पथभ्रष्ट, धर्मभ्रष्ट बुझना जाइत छनि हुनका/नारी समाजक उत्थानक अग्रदूत/बुद्ध, अम्बेडकर, फुले, पेरियार'। तहिना कवि तथाकथित प्रगतिशील साहित्यकारक सेहो आलोचना करैत छथि जे 'दलित-विमर्श पर सधने रहैत छथि मौन/आ जँ कियो पूछि दैत छनि/ वर्ण-व्यवस्था पर प्रश्न/त' ओ कान पर जनउ ध' क'/पेशाब करबाक बहन्ने/ विदा भ' जाइत छथि तुरन्त।'

अपन मातृभाषा मैथिलीक प्रति कविकेँ अथाह अनुरक्ति छनि मुदा ओ अतीतजीवी नहि, भविष्योन्मुखी हेबाक आग्रही छथि, किएक त' दलित-समाजक अतीत गुणगान नहि, रुदन आ मर्सियासँ भरल अछि। एहि कारणेँ कवि अपन मातृभाषा मैथिलीकेँ वर्चस्वसँ मुक्ति करबाक लेल व्यग्र छथि जाहिसँ ई भाषा आ साहित्य मिथिलाक सभ जाति-वर्गक प्रतिनिधित्व क' सकय आ मिथिलाक दलित-बहुजन सेहो अपन मातृभाषा पर गर्व क' सकय, 'हमरा सन गैर-ब्राह्मण वर्गक लेखक/द' सकैछ मैथिली साहित्यकेँ विस्तार/मानववादी सोच, वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ/समृद्ध क' सकैत छैक/ मैथिली भाषाक साहित्य संसार/मेटा सकैछ भाषाक ऊपर लागल ओहि कलंककेँ/जकरा आन भाषाबला कहैत छैक/ जे मैथिली भाषा पर छैक मात्र ब्राह्मणे वर्गक अधिकार/जगा सकैछ मिथिला क्षेत्रमे रहनिहार/ब्राह्मणेत्तर वर्गमे अपना मातृभाषाक प्रति अनुराग/ मुदा जखन तथाकथित भाषाक ठिकेदार सभ/ हमरे नहि करैत अछि स्वीकार/त' चिन्हा जाइत छैक/ ओकर भाषाक प्रति छद्म अनुराग।' परार्थीकेँ एहि बातक भान छनि जे मैथिली मूलतः मिथिलाक दलित, बहुजन, स्त्री, पचपनियाँ आदिक भाषा थिक ने कि संस्कृत उचार' बला भूसुर लोकनिक जे असली भाषीकेँ 'रड़हा बोली' कहि हुनका भीतर हीन भावना भरैत रहल। तेँ कवि ओहि 'हीन भावना ग्रस्त वर्ग'मे शामिल नहि छथि जे अपन मातृभाषासँ पलायन क' जाइत छथि, ओ त' ताल ठोकिक' कहैत छथि जे 'मैथिली हमरो मातृभाषा अछि/ आ हम अपना मातृभाषासँ गन्दगी मेटेबाक लेल/ लेने छी संकल्प।' ताहिना एकटा आर कवितामे ओ कहैत छथि–

'मिथिलामे रहनिहार सभक जुबान छै मैथिली

कोनो एक जातिक नहि गुलाम छै मैथिली
मैथिली पर नहि छैक कोनो एक धर्मक स्वत्वाधिकार
बहुतो मुसलमान भाइक कलाम छै मैथिली।'

निःसन्देह मैथिली साहित्यमे जेना-जेना दलित-लेखन बढ़ैत जायत, एहि भाषाक विस्तारक संग-संग भाव आ भंगिमा सेहो बदलैत जायत, आ जकर एकटा मजगूत कड़ी रामकृष्ण परार्थी साबित हेताह।

परार्थीक कवितामे भाव पक्षक अनुरूप शिल्प पक्ष किछु आलोचक-पाठककेँ कमजोर बुझना जेतनि। मुदा इहो सत्य थिक जे जाहि वर्गकेँ कलम-किताबसँ वर्षो दूर राखल गेल, ओ समाज अपना हाथमे कलम अबिते पहिने अपन व्यथा लिखत ने कि शिल्पक चमत्कार देखाओत। थेरीगाथाक स्त्रीसँ ल' क' कबीर, रविदास होइत दलित-स्त्री लेखन धरि अभिधा हाशियाक रचनाकारक लेल सम्प्रेषणक हथियार साबित भेल। तेँ प्रायः सभ भारतीय भाषाक दलित-साहित्यक आरंभ एही अनगढ़ अभिधाक संग भेल। मैथिलीमे दलित-लेखन त' एखन ठेहुनियाँ भरि द' रहल अछि, कने गति आब' ने दियौक, ताल आ थिरकब त' अपने आबि जेतै!

—श्रीधरम
बी-277-ए
वसंत कुंज एंक्लेव
नई दिल्ली-110070

धिक्कार अछि, धिक्कार

हमरा समाजक साहित्य के लिखत
बड़ गूढ़ प्रश्न अछि हमरा लग ठाढ़
जखन कि हमर बंधु-बांधव सभ
पुरस्कार-सम्मानक लोभमे बनल अछि चाटुकार
हिनका सभकेँ कनिको नहि चिंता छनि
अपना समाजक
जे अदौ कालसँ छैक मनुवादी व्यवस्थासँ संत्रस्त
ई सभ सदिखन रहैत अछि
मंच-माला-पाग लेल अनुरक्त

किनसाइत
एहने स्वार्थी लोक लेल कहने रहथिन बाबा भीम
अनपढ़ लोक नहि अछि समस्या हमरा समाज लेल
समस्या अछि त' ओ पढ़ल-लिखल लोक
जे गलतकेँ सही कहबामे क' रहल अछि
अपन बुद्धिक उपयोग

मुदा तइसँ की
हिनका सभकेँ त' बनबाक छनि महान
करेबाक छनि इतिहासमे दर्ज अपन नाम
चाहे आबयबला पीढ़ी बनल रहैक सभदिन गुलाम
हिनका सभकेँ चाही साहित्य सम्मेलनमे मंच पर स्थान

मुदा कायरकेँ इतिहासो कहाँ करैत छैक स्वीकार
मिरजाफरकेँ ओहिना नहि कहल जाइत छैक अंग्रेजक सियार
ओहो हिनके सभ जकाँ छल समाजक गद्दार
एहेन गद्दार साहित्यकार सभकेँ
धिक्कार अछि, धिक्कार!

समाजक गद्दार नहि छी

अपन दुख-व्यथा लिखैत छी, गजलकार नहि छी
हम मंच-माला-पागबला साहित्यकार नहि छी

शोषित-वंचित छी, लिखैत छी अपन हक-अधिकार
कोनो मनुवादी साहित्यकारक चाटुकार नहि छी

स्वतंत्र छी, स्वतंत्र अछि हमर साहित्यिक संसार
लिखब सौख अछि, ककरो बोनिहार नहि छी

जे देखैत छी, भोगैत छी, लिखैत छी वैह गप
कपोल कल्पित कथाबलाकेँ स्वीकार नहि छी

ओना मिल सकैत छल हमरो अकादमीक पुरस्कार
मुदा आत्म-स्वाभिमान बेचबा लेल तैयार नहि छी

'परार्थी' हम कोना करी निज स्वार्थक कारोबार
संतोष एतेक अछि जे समाजक गद्दार नहि छी।

समझौता नहि अछि स्वीकार

समझौताक गप नहि करी हमरासँ
नफा-नुकसान, घाटाक गप नहि करी हमरासँ
ने हम स्वार्थी छी
आ ने छी हम बिकाउ
परिणामक डर सेहो नहि अछि हमरा
जे हेतैक से देखल जेतैक
हमरा अहाँ अपन गीदड़-भभकीसँ नहि डराउ

मानल जे एखन धरि हम जीतल नहि छी
मुदा एखन धरि त' हम हारो नहि
केलहुँ अछि स्वीकार
एखन लड़ब हम
संघर्षरत रहब हम
जाधरि बाँचल अछि मिसिओ भरि जीतक आस
जाधरि चलैत रहत हमर अंतिम साँस
अहाँक समझौता आकि कोनो शर्त
किन्हुँ नहि करब स्वीकार

हमरा बुझल अछि अहाँक शब्दकोशमे
समझौताक अर्थ होइत छैक षड़यंत्र
आ शर्त माने छल प्रपंच-धोखा
हम जानि-बुझिक' नहि बनि सकैत छी
अहाँक शिकार
हमरा मृत्युसँ पहिने आत्महत्या नहि अछि स्वीकार
हमरा बुझल अछि
विश्वासघात अछि अहाँक सभसँ पैघ हथियार।

दुविधा

बहिनजी लिखैत रहैत छथि
स्त्री विमर्शक कथा-कविता
स्त्री हक-अधिकार लेल उठबैत रहैत छथि आवाज
हुनकर हार्दिक इच्छा रहैत छनि
स्त्री-शोषणमुक्त बनय नबका समाज
हँ, ई गप्प दिगर अछि जे बहिनजी
ब्राह्मणवादक परिधिमे रहैत छथि
सदिखन ठाढ़
हुनकर आदर्श छनि
नारीकेँ ताड़नाक अधिकारी कहयबला तुलसीदास

विरोधाभाषसँ भरल छनि हुनकर स्वभाव
स्त्री स्वतंत्रताक प्रबल विरोधी मनु महराजक
विरोधमे नहि फुजैत छनि हुनकर बकार
पथभ्रष्ट, धर्मभ्रष्ट बुझना जाइत छनि हुनका
नारी समाजक उत्थानक अग्रदूत
बुद्ध, अंबेडकर, फुले, पेरियार

दलित विमर्श पर हुनका उठैत छनि आक्रोश
देवदासी परंपरा, सबरीमाला विवाद सन गम्भीर
स्त्री समस्याकेँ ओ नहि करैत छथि प्रतिरोध
बाँसक कमचीसँ सूप बिनैत स्त्री
हुनका बुझना जाइत छनि डोमिन
आ नगरपालिकाक सड़क बहारैत स्त्री मेहतराइन
ओ एगो स्त्रीसँ बेसी स्वयंकेँ मानैत छथि पंडिताइन।

हम नहि कहि सकैत छी अहाँकेँ अंतिम प्रणाम

हे हमर मातृभूमि आ मातृभाषा
हम नहि कहि सकैत छी अहाँकेँ अंतिम प्रणाम
हमरा नजरिमे दुनियाँक सभसँ मिठगर
बोली छी अहाँ
आ सभसँ सुन्नर स्थान
हम नहि कहि सकैत छी अहाँकेँ अन्तिम प्रणाम

अहाँक अछि हमरा पर बहुते उपकार
अहींक बोलीसँ फूजल अछि हमर पहिल बकार
अहींक अन्न-जलसँ पलायल अछि हमर देह
अहींक स्वच्छ बसातसँ मेटायल अछि
हमर हरेक क्लेश
अहींक माटि-पानिमे खेल-कूदिक'
हम भेल छी सियान
हम नहि कहि सकैत छी अहाकेँ अंतिम प्रणाम

हँ, भैयारीमे होइत छैक विचारक भिन्नता
चलैत रहैत छैक हक-अधिकारक लड़ाइ
एकर माने ई नहि जे हम कायरक कलंक लगाक'
सदैवक लेल कतहु आनठाम बसि जाउ
हमरा रहबाक अछि एहीठाम
हमरा बजबाक अछि मैथिलीक जुबान
लड़िक' लेबाक अछि उचित सम्मान
हम नहि कहि सकैत छी अहाँकेँ अंतिम प्रणाम
हँ, हमर कर्तव्य अछि जे करी अहाँक विकास
अहाँकेँ पाखंड, आडंबर आ

अंधविश्वासक गुज अन्हारसँ निकालबाक लेल
देखबी पुनर्जागरणक प्रकाश
हम नहि देखि सकैत छी जे
कोनो जाति आकि क्षेत्र विशेषक लोक
अहाँकेँ बनौने रहय अपन गुलाम
हम नहि कहि सकैत छी
अहाँकेँ अंतिम प्रणाम।

यौ अतीतजीवीजी

यौ कविजी, पहिनैत रहू फूलक माला
आ मैथिल पाग
ओढ़ैत रहू दोपटा
करैत रहू अपन फूसिऔका संस्कृति
आ निठल्ला परम्पराक रक्षा
मंच परसँ फेकैत रहू भ्रमजाल
एक-एक आखर चुनि गढ़ैत रहू
नव-नव ब्राह्मणवाद

यौ अतीतजीवीजी
ई दोष नहि थिक अपनेक
ई दोष अछि अहाँक शोणितक संस्कारक
ई दोष अछि अपनेक पुश्तैनी विचारक

मानलहुँ, बाबा वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'
अमिताभ बच्चन, सचिन तेंदुलकर, आ
लताजी सभ बनौने अछि
अपना-अपना क्षेत्रमे
एगो अलग पहिचान
मुदा ई गप्प अहाँ कोना कहलियैक
जे आब जनमबै नहि करतैक कियो महान

यौ प्रतिगामीजी
पैखाना क' क' लोक घसकैत छैक आगू
आ अहाँ घसकैत रहू पाछू
मुदा बन्न करू भविष्य-द्रष्टा बनबाक ढोंग

दहीसँ झाँपल चीनी देखाइत नहि अछि
आ भूमिगत वस्तुजातकेँ करैत छी खोज

यौ, पहिने रेडियो फेर टीवी
फेर एल.ई.डी.
आ आब हाथे-हाथे एंड्रॉयड मोबाइल
पहिनेसँ बेसी उन्नत भेलैए
संसाधन आ सामान
पहिनेसँ बेसी विकसित भेलैए
खेल, कला, साहित्य, विज्ञान

यौ, संकीर्ण भेल अछि त' अहाँक सोच
यौ, ह्रास भेल अछि त' अहाँक विचार
मुदा आत्म-अवलोकन नहि करय देत
अहाँक जातीय अहंकार
प्रगतिशील नहि होबय देत कहियो
अहाँक ऊँच-नीचक निठल्लू विचार

अहाँ एखनहुँ धरि जनैत रहू
पृथ्वीक भार उठौने अछि शेषनाग
अहाँ एखनहुँ धरि मानैत रहू
हनुमानजी घोंटि गेलखिन पृथ्वीसँ
कइएक गुणा नम्हर सुरुज
मुदा आब हम सभ नहि बनय बला छी मुरुख।

नामक भ्रम

हौ भाइ, कबीरदासक चेला
अन्दाजे नहि फेकह ढेला
पहिने नीकसँ बुझि लैह कबीर-पंथक उद्देश्य
पहिने धिआनसँ समझि लैह कबीर साहेबक
सामाजिक सन्देश
तखने बुझना जेतह हुनकर दर्शन आ चिन्तनमे
आध्यात्मिक चेतनासँ बेसी महत्वपूर्ण छैक
सामाजिक चेतना
मुदा तोरा सभक प्रवचन आकि कोनो चर्चामे
हमरा सुनबामे नहि अबैत अछि
जे तोँ सभ करैत छहक छुआ-छूत, ऊँच-नीच आदि
कोनो तरहक सामाजिक भेदभावक भर्त्सना

तोँ सभ परलोकक चक्करमे पड़ि नहि करह
एहिलोककेँ खराब
तोहर सभक उत्तरदायित्व छह
समाजमे व्याप्त पाखण्ड, आडम्बर, अंधविश्वास पर
करब कसगर प्रहार
तोहर सभक कर्त्तव्य छह
जड़ता, रुढ़िवादिता आ कर्मकाण्डक
विरोधमे आवाज उठाएब

हौ, खाली भजन-सुमिरन आ चरण खटियाएब
धरि नहि छै कबीर-पंथ
आ ने घुमि-घुमिक' दल खएलासँ
भ' जेबहक कबीरहा संत
कबीर-पंथ मानवताकेँ प्रचार छै

कबीर-पंथ सद्भावना-भाइचाराक
मूल आधार छै
कबीर-पंथक सच्चुका अनुयायी बनेबाक लेल
तोरा आचरणमे उतारह पड़तह
सत्य-अहिंसा, क्षमा, दया, करुणा
मानय पड़तह निर्गुण निराकार परब्रह्मकेँ छोड़ि
नहि छैक कोनो दोसर-तेसर परमात्मा
तोरा मंदिर, मस्जिद आ गिरजाघरसँ
छोड़ह पड़तह आस
हरेक जीवक आत्मामे परमात्मा होइत छैक
एहि सिद्धांत पर करह पड़तह दृढ़ विश्वास
जरूरत पड़ला पर शोषक-उत्पीड़क लोकक विरुद्ध
तोरा उठाबय पड़ि सकैछ लुकाठी
स्वयं केर अहंकार जरेबाक लेल
तोरा लेसह पड़तह ज्ञानक बाती

हौ, आर बेसी की कहियह
सदगुरु कबीर साहेबक आदर्श आ विचारकेँ
एगो कवितामे व्यक्त केनाय छै
बड़ मोश्किल काम
मुदा एहि गप्पकेँ तोँ सभ सदिखन रखियह धिआन
तुलसीदासक राम आ कबीरदासक राम
दुनू छै एक-दोसराक विपरीत
एक समानक नामक भ्रममे पड़ि
तोँ सभ नहि होइयह अपन बाटसँ दिग्भ्रमित
कियैक त' तुलसीदासक राम तोरा सभकेँ ओझरा देतह
ब्राह्मणवादी व्यवस्थामे
आ कबीर साहेबक राम तोरा पहुँचा देतह
अमर देसवामे।

जारी रहत विरोध

जारी रहत विरोध
जारी रहत प्रतिरोध
हमरा बाद हमर बेटा
हमरा बेटाक बाद हमर पोता
चुप नहि राखत अपन आक्रोश
जारी राखत अपन विरोध

अहाँ कहबै स्वर्ग-नर्क
ओ कहत बकवास
अहाँ कहबै पुनर्जन्म
ओ कहत अन्धविश्वास
अहाँ कहबै भगवान
ओ कहत विज्ञान
अहाँ चलबै दक्षिण
ओ चलत बाम
बिनु प्रमाणकेँ ओ नहि मानत
अहाँक एकहु टा गप
अहाँक सभ फूसि कल्पनाकेँ ओ कसैत रहत
तर्कक कसौटी पर
अहाँक छल-प्रपंचक ओ करैत रहत भंडाफोड़
अहाँक षड़यंत्रक विरुद्ध
जारी राखत अपन विरोध

अहाँ कहबै धर्म
ओ कहत मनुक्खता
अहाँ कहबै मठ-मंदिर
ओ कहत इसकूल-कॉलेजक शिक्षा

अहाँ कहबै धर्मशास्त्र
ओ कहत संविधान
अहाँ कहबै वर्णव्यवस्था
ओ कहत, हम नहि छी ककरो गुलाम
बहुत दिन रखलहुँ अहाँ हमरा सभकेँ अन्हारमे
अहाँकेँ औकाति नहि रहत जे रोकि लेबै
ओकर सभक इजोत
ओ सभ तोड़ि देत ओहि सभ मान्यता, परम्परा
आ वर्जनाकेँ
जँ ओकरा बुझना जेतैक अपन विकासक अवरोध
अहाँक वर्चस्वक संस्कृतिकेँ विरुद्ध
ओ सभ जारी राखत अपन विरोध

ओ नहि मानत भदबा
ओ नहि मानत खरमास
ओ नहि मानत ग्रह-नक्षत्र
ओ नहि मानत कोनो कर्मकाण्ड
ओकरा बुझल रहतैक अहाँक विद्याकेँ
मानव हितमे नहि छैक कोनो उपयोग
ओ अहाँक ढोंग-पाखण्डक विरुद्ध
जारी राखत अपन विरोध।

हौ तुलसीदास

हौ तुलसीदास!
राम चरित मानस लिखबा काल
तोँ नहि सोचने रहक जे कहिओ-ने-कहिओ
स्त्रीगण आ बहुजनकेँ मिलतैक
पढ़बाक-लिखबाक हक-अधिकार
आकि तोरा छलह दूरदृष्टिक अभाव
आ ने त' तोरामे भरल छलह जातीय अहंकार
आ ने त' फेर तोँ छलह
संकीर्ण मानसिकताक शिकार
किछु ने किछु ऐब त' अबस्से छलह तोरामे
जे पोथी लिखाएल गेलैक
हिन्नू समाजक पथ-भ्रष्टक तुलसीदास

हौ, हम तोरा कोना मानी संत कवि
हमरा नहि देखाइत अछि तोरा व्यक्तित्वमे
सज्जनताक एको गो लक्षण
अपन जातीय वर्चस्व कायम रखबाक लेल
मानवतासँ करैत रहलह जीवनपर्यंत षड़यंत्र
बनल रहलह सभदिन वैज्ञानिक सोच आ
बौद्धिक-सामाजिक चेतनाक दुश्मन
हनुमान जीकेँ घोंटा देलहक
पृथ्वीसँ कइक गुणा नम्हर सुरुज
बुझना जाइत अछि तोँ छलह
एकदमसँ निछच्छे मुरुख

हौ मानैत छियह, छलह तोहर काव्य-शैली उत्कृष्ट
एकर मतलब की

तोँ दलित-स्त्रीक शोषण-उत्पीड़नसँ
भ' जेबह दोषमुक्त?
सुनैत छियह ब्राह्मणक भाषा संस्कृतक जगह
अवधी भाषामे मानस लिखबाक कारणे
तोहर समकालीन ब्राह्मण सभ
कएने रहअ तोहर खूब विरोध
की ओकरे सभकेँ खुश करबाक लेल त' नहि
भरलहक मानसमे बहुजन आ स्त्रीगणक प्रति ईर्ष्या-द्वेष

सुनैत त' छियह इहो जे मुगलकालमे होइत छलैक
हिन्नू पर अन्याय-अत्याचार
तोरा समयसँ किछुए दिन पूर्व
अयोध्यामे एगो तथाकथित मंदिर तोड़ि
भेल रहैक ओहि पर मस्जिद तैयार
मुदा सत्ताक कुकृत्य आ निरंकुशता पर
नहि फुजलह तोहर बकार
प्रगतिशीलताक दुश्मन, सत्ताक चाटुकार
तोँ सदिखन रहलह
जड़ता, रूढ़िवादिता, यथास्थितिवादी आ
ब्राह्मणवादक पक्षमे ठाढ़
तखन हम दलित कवि कोना करियह
तोहर जय-जयकार!

अपन मुरेठा जिंदाबाद

सुच्चा मैथिल दियौ आवाज
अपन मुरेठा जिंदाबाद

हमरा-अहाँक स्वाभिमान अछि मुरेठा
कमेरा वर्गक पहिचान अछि मुरेठा
बाप-पुरखाक निशान अछि मुरेठा
वीर पुरुखक शान अछि मुरेठा
मुरेठासँ सभ रीति-रिवाज
अपन मुरेठा जिंदाबाद

बंठा वीर चमारक मुरेठा
लोरिक-सलहेश सन्तानक मुरेठा
दीनाभद्री समांगक मुरेठा
भरौड़ा स्थानक मुरेठा
मुरेठा अपन सांस्कृतिक इतिहास
अपन मुरेठा जिंदाबाद

शोषक-सामंतक प्रतिकार अछि मुरेठा
सत्य-न्यायक आधार अछि मुरेठा
क्रांतिक शुरुआत अछि मुरेठा
गरीब-गुरबाक अधिकार अछि मुरेठा
दोसराक परिधान नहि लिअ उधार
अपन मुरेठा जिंदाबाद।

प्रगतिशील साहित्यकार

अँय, की कहलियैक
ओ छथि प्रगतिशील साहित्यकार?
भ' सकैछ!
किएक त' हुनकर कथा-कविता, आलेखमे
झलकैत रहैत छनि प्रगतिशीलता
जनवादी बुझना जाइत छनि हुनक दृष्टिकोण
मुदा हम कएक बेर देखने छियनि हुनका
दलित-विमर्श पर सधने रहैत छथि मौन
आ जँ कियो पूछि दैत छनि
वर्ण-व्यवस्था पर प्रश्न
त' ओ कान पर जनउ ध' क'
पेशाब करबाक बहन्ने
विदा भ' जाइत छथि तुरन्त।

ब्राह्मणवादक परित्याग

हौ भाइ बौधू
जाधरि मानैत रहब' ब्राह्मणवाद
ताधरि हम-तोँ आजाद भइयोक'
नहि छी आजाद
हौ, ब्राह्मणवाद माने साफे बुझह अन्हरजाल
एहिमे नहि सुझतह अपन हक-अधिकार
एहिमे नहि औतह स्वतंत्र विचार
ई भाग्य-भगवान, स्वर्ग-नर्क आ
पुनर्जन्ममे ओझराक'
नहि होबय देतह हमरा-तोरा सभकेँ
सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक विकास

हौ, घर तोहर आ
घरबास लेल पूछय पड़तह बाभनेसँ
हौ, बेटा-बेटी तोहर आ ओकर बियाहक दिन
धराबह पड़तह बाभनसँ
जन्म त' नामकरण आ मृत्यु त' श्राद्ध
बाभनक पोथी-पतरा छीनि लेने छह
स्व-निर्णय लेबाक सभ आधिकार
आ हम-तोँ ओकर षड़यंत्रकेँ कहैत छहक
अपन रीति-रिवाज

हौ, जाधरि करैत रहबह
ब्राह्मणवाद पर विश्वास
ताधरि नहि हेतह हमरा-तोरामे
वैज्ञानिक सोच आ बौद्धिक चेतनाक विकास
ब्राह्मणवादक उद्देश्ये छैक

हमरा-तोरा मुरुख बनाक' रखबाक
ओ गोबरकेँ गणेश बनाक'
बनबैत रहतह मूर्खाधिराज
ओ गायक नाङैर पकड़ाक'
फूसिक करबैत रहतह वैतरणी पार
छल-प्रपंच, फूसिए छैक ब्राह्मणवादक आधार

हौ, ब्राह्मण नहि देतह कहिओ हमरा-तोरा
अपना बरोबरिक स्थान
कल्पित कथा-पिहानीमे भरमाक'
पुजबैत रहतह अपन पैर
आ शुद्र-अछूत कहि करैत रहतह अपमान
ओकर वेद-ग्रंथक यैह छैक विधान
कहुना अपना सभ बनल रहह
ओकर मानसिक गुलाम

हौ, एहि मानसिक गुलामीसँ मुक्ति लेल
जरूरी छैक ब्राह्मणवादक परित्याग
अपन आत्म-सम्मानक रक्षा लेल जरूरी छैक
करब ओकर धर्म आ धर्म-ग्रंथक बहिष्कार
तखने हेतह आजादीक मतलब चरितार्थ
आ तखने मिलतह अपन सभक अधिकार
नहि त' ब्राह्मणवाद तोरे नहि
तोरा आबयबला पीढ़ीकेँ सेहो
अवरुद्ध करैत रहतह चतुर्दिक विकास।

जरूरी छैक पढ़ब संविधान

हौ भाइ बौधू
ई वेद-पुराण पढ़लासँ नहि मिलतह
अपना सभक समस्याक समाधान
अपना सभक सामाजिक-आर्थिक उत्थान लेल
अपना हक-अधिकारक ज्ञान लेल
अपना सभक बाल-बुतुरुक कल्याण लेल
जरूरी छैक पढ़ब भारतीय संविधान
तखने मिलतह समाजमे उचित स्थान
दलित-शोषण, अत्याचार पर भगवान नहि
एकमात्र संविधान लगा सकैछ लगाम

हौ, जहिया मंत्र-श्लोक पढ़ला पर
काटल जाइत रहैक जीह
हौ, जहिया वेद-ग्रंथ सुनला पर
पिघलल काँचसँ बन्न कएल जाइत रहैक कान
तहिया कतय पतनुकान ध' लेने रहह
तोहर भगवान
धनि भारतक संविधान
जे आइ मंच पर पाग-माला पहिरिक'
बनल छह दलित विद्वान

हौ यादि करह ओ दिन
जाहि दिन कोनो सार्वजनिक कुआँ छूअब तक
मानल जाइत रहैक अपराध
हौ, याद करह ओ दिन
जाहि दिन हमरा-तोरा मुँह देखने किछु लोकक

भ’ जाइत रहैक जतरा खराब
हौ, यादि करह ओ दिन
जाहि दिन खटिया पर बैसब त’ दूरक गप्प
हमरा तोरा जूता-चप्पल पहिरबाक
तकर्कें नहि रहह अधिकार
ताहि दिन ओकर अमानवीय अत्यचार पर
नहि फुजलह बकार
आ आइ जखन मिलि गेलह मौलिक अधिकार
त’ कनिओटा गप्प पर
तनिक’ भ’ जाइत छहक
जवाब देबाक लेल तैयार
यैह छैक संविधानक चमत्कार
ओना त’ फूसिक चमत्कारसँ
भरले छैक धर्मशास्त्र!

हम विधर्मीए ठीक छी

हिंसा, विद्वेष, विध्वंस नहि रहल
हमरा कहिओ पसिन
ओ मान्यता-परम्परा
ओ रीति-रिवाज
ओ धर्मग्रंथ-धर्मशास्त्र
आ शास्त्रज्ञसँ घोर घृणा रहल अछि हमरा सभदिन
जे मानवताक विरुद्ध दैत रहैत छैक तर्क

छागरक शोणितसँ खुश हेतीह भगवती
शुद्रक छीनि लेल जेबाक चाही
सभ तरहक अभिव्यक्ति
स्त्रीगणक आजादी पर लगाओल जाय
पूर्ण प्रतिबंध
धर्मक अढ़मे तथाकथित भगवान अछि हत्या आ
अनाचार करबाक लेल स्वतंत्र

ई सभ बुझना जाइत अछि हमरा
जघन्य अपराध आ
आततायी, अमानवीय विचार

ओना हम बेसी नहि पढ़ने छी धर्मशास्त्र
मुदा एतेक जरूर बुझैत छियैक
जे धारण करबाक योग्य, सैह छैक धर्म
त' कि ई घृणा, विद्वेष, हिंसा आ भेदभाव
धारण करबाक योग्य छैक?

धर्मक प्रमुख उद्देश्य होइत छैक
मानवकेँ मानव बनेनाय

त’ कि बिनु सेवा-सहयोग आ सद्भावनाकेँ
मानवताक कल्पना कएल जा सकैत छैक?

तखन फेर, बस मात्र अन्याय, अत्याचर, शोषण
असमानता आ गुलामी
यैह होइत छैक धर्म?
तहन हम विधर्मीए ठीक छी।

विद्रोही बसात

लोकक तीव्र विरोध आ प्रतिरोधक बावजूदो
हम रोपि रहल छी क्रांतिक गाछ
एहि गाछकेँ सींचि रहल छी
अपना शोणित-पसेनासँ
द' रहल छी एहिमे
नित नव विचारक खाद
एहि उम्मेदक संग
जे ई गाछ हमर आबयबला पीढ़ीकेँ
कहतैक हमर संघर्षक इतिहास
जाहिसँ ओकरा सभकेँ बढ़तैक हिम्मति आर सहास
अन्याय-अत्याचारसँ लड़बाक लेल
ओ सभ बुलंद करैत रहतैक अपन अवाज
इंकिलाब-जिंदाबाद

ई गाछ एक ने एक दिन बनतैक
सामाजिक न्यायक प्रतीक
समाजमे नहि रहतैक कियो उच्च आ नीच
दलित-शोषित-वंचित वर्गमे जगेतैक
आत्म-स्वाभिमान
ओ सभ नहि सहतैक अपमान
ई गाछ फुलेतैक आन्दोलन
आ फड़तैक इंकिलाब
एकर छत्र-छायामे आबि मुर्दो चिकरतैक जोरसँ
इंकिलाब-जिंदाबाद

ई गाछ रोपैत काल
हम जे-जे देखि रहल छी सपना

जे-जे क' रहल छी कल्पना
ओ सभ हैत साकार
ई अछि हमरा विश्वास
एहि गाछसँ बहतैक विद्रोही बसात
जकर प्रभावसँ लोक षड़यंत्रकारी व्यवस्था
आ निठल्ला सत्ताक खिलाफ
बुलंद करैत रहतैक अपन आवाज
इंकिलाब-जिंदाबाद।

भाषाक प्रति छद्म अनुराग

जहिना हमरा लेल आवश्यक अछि
हमर मातृभाषा
तहिना मातृभाषा लेल आवश्यक छियैक हम
आ हमरा सन लोक
जे वैचारिक स्तर पर करैत होइक
मनुवाद आ ब्राह्मणवादक विरोध
हमरा सन गैर-ब्राह्मण वर्गक लेखक
द' सकैछ मैथिली साहित्यकेँ विस्तार
मानववादी सोच, वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ
समृद्ध क' सकैत छैक
मैथिली भाषाक साहित्य संसार
मेटा सकैछ भाषाक ऊपर लागल ओहि कलंककेँ
जकरा आन भाषाबला कहैत छैक
जे मैथिली भाषा पर छैक मात्र ब्राह्मणे वर्गक अधिकार
जगा सकैछ मिथिला क्षेत्रमे रहनिहार
ब्राह्मणेत्तर वर्गमे अपना मातृभाषाक प्रति अनुराग
मुदा जखन तथाकथित भाषाक ठिकेदार सभ
हमरे नहि करैत अछि स्वीकार
त' चिन्हा जाइत छैक ओकर भाषाक प्रति
छद्म अनुराग।

सम भावक दवाइ

ओ अदौकालसँ अपना आँखि पर
जड़ताक आ रूढ़िवादिताक अन्हरपट्टी बन्हने छला
आब खोलय चाहि रहल छथि अपन आँखि
भकुआएल आँखिसँ देखय चाहि रहल छथि
आधुनिकता आ विज्ञानकेँ
साफ करयमे लागल छथि
आँखिक पाखण्ड-आडम्बरक कीच
मुदा सभदिन अंधश्रद्धा आ अंधविश्वास देखयबला
ओ आँखि कोना सहि सकैत अछि
एकदमसँ यथार्थक इजोत
श्रेष्ठताबोधसँ ग्रसित संकीर्ण मानसिकताक कारणे
हुनका समानता आ बंधुता देखबामे
हेबे करतनि दृष्टिदोष
आ एकाधिकारक घमंडमे नहि सुझतनि
'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'
जाधरि अपना आँखिमे नहि लेताह
सम भावक दवाइ।

फूसि पर गुमान

पलायन अपना सभक मजबूरी अछि भाइ
रोजी-रोटी लेल छोड़हि पड़त अपन गाम
मुदा कतहु रही, करैत रहब
मिथिला-मैथिलीक गुणगान
कहैत रहब लोकसँ माछ-पान-मखान अछि
हमरा सभक सांस्कृतिक पहिचान
छोट-छिन काज लेल हमरा ओहिठाम
कएल जाइत छैक पाग-दोपटासँ सम्मान
मुदा ई नहि कहबै ककरोसँ
जे मिथिलामे छैक कल-कारखानाक आ
रोजी-रोजगारक अभाव
हम मिथिलावासी सभ प्रत्येक बर्ख होइत रहैत छी
रौदी-दाहरसँ तबाह

कहब लोककेँ गुमानसँ
जे हमर भाषा मैथिली दुनियाँक सभसँ
समृद्ध भाषा अछि
हमर बोली मैथिली दुनियाँक सभसँ
मिठगर बोली अछि
इहो गप जरूर कहबै लोकसँ जे मैथिलीमे बजलासँ
नहि होइत छैक अपनामे झगड़ा-लड़ाइ
मुदा ई गप नहि बाजब ककरो लग
जे हमरा मातृभाषामे एखनो
बाभन-सोलकन छैक भाइ

करब अपना सभ्यता-संस्कृति पर सेहो गुमान
गौरवान्वित होइत कहब लोकसँ

सीता हमर बहिन अछि आ पाहुन श्रीराम
मुदा ई नहि कहब ककरोसँ जे हमरा मिथिलामे
दहेजक समस्या बनल अछि अभिशाप
हमर अपन बहिन सीता कुमारीकेँ दहेजक लोभी
मिथिलेक एगो गाममे
जीबिते जराक' क' देलकै छाउर

भाइ कहब लोकसँ अपन छाती फुलाक'
मिथिलामे महादेव उगना बनि लेने रहथिन अवतार
मुदा ई गप नहि कहबै ककरोसँ
कि पुनर्जागरणक इजोतसँ मिथिलाकेँ
आलोकित नहि होबय देलकै
पुरातनपंथी दरभंगा महराज
जाहि कारणे मिथिलामे एखनो पसरल छैक
पाखण्ड, आडम्बर, अंधविश्वास
एतय नहि भेलैए बौद्धिक चेतना आ
वैज्ञानिक चिंतनक विकास
जातिय अहंकारसँ भरल किछु लोक
बहुसंख्यककेँ राड़-रोइया, सोलकन, अछूत कहि
उड़बैत रहैत छैक उपहास

भाइ ई गप त' कथमपि नहि बिसरब
यादि पाड़िक' कहब सभसँ
मिथिलाक धरती पर जन्म लेने रहथिन
महाकवि विद्यापति, मण्डन मिश्र आ अयाची सन
बड़का-बड़का विद्वान
मुदा ई गप नहि बाजब
जे ओहि महान धरतीक संस्कृति बनि गेल छैक
घीचब एक-दोसराक टाँग
ओतहुका साहित्यमे एखनो धरि नहि मिलैत अछि

दलित-विमर्शकेँ उचित स्थान

लोरिक, सलहेस, दुलरा दयाल सिंह, दीनाभद्री आदि
अपना सभक लोकदेवताक क' देबैक
थोड़े-बहुत बड़ाइ
मुदा एहि गपक नहि जनतब हुअ देबैक ककरो
जे मिथिला-मैथिली नामक संस्था आ संगठनसँ
ई मिथिलाक लोकदेवता सभ बारल रहैत छैक भाइ

आर बेसी की कहू
बस एतेक गपक राखब धिआन
फूसि पर गुमान करब छैक
अपना मैथिल सभक पहिचान।

हौ भाइ बोधराज-1

हौ भाइ बोधराज
तोरामे दलित चेतनाकेँ छह साफे अभाव
जँ तोरा थोड़बो-बहुत रहितह दलित चेतनाक ज्ञान
त' तोँ अपनाकेँ कथमपि नहि घोषित करितह हनुमान
हौ हनुमान माने मानसिक गुलाम
हनुमान, जकरामे रतिओ भरि नहि छैक स्वाभिमान
साफ-साफ कहिअ त'
हनुमान माने दासताक प्रतीक
हनुमान जे गाबए सदिखन चारण गीत
आ ई गप सर्वविदित छैक जे
ब्राह्मणवादी कलमकेँ मानसिक गुलाम
सभदिन रहलै पसिन
यैह कारण छैक जे चापलूस-चाटुकार हनुमानकेँ
ओ विशेषण देलकै महान भक्त कपीश!

हौ भाइ बोधराज-2

हौ तथाकथित दलित नेता
भाइ बोधराज
जँ रखबाके छलह तोरा कोनो उपनाम
त' तोँ शंबूक उपनाम राखिक'
क' सकैत छलह अपना पर गुमान
पाबि सकैत छलह दलित, शोषित, वंचितसँ
उचित सम्मान
मुदा शंबूकक विषयमे सेहो तोरा कहाँ हेतह ज्ञान
राजनीतिक स्वार्थ आ उच्च भोग-विलास
तोरा नहि हुअ देलकह अपन असली
अस्मिताक पहिचान

हौ शंबूक रामायणक ओ पात्र
जे राम-राज्यमे ब्राह्मणवादी व्यवस्थाक विरुद्ध
बुलंद कएने रहैक अपन आवाज
शंबूक, जकरा जानसँ बेसी प्रिय रहैक
अपन हक-अधिकार
ओ गैर बराबरीक प्रश्न पर निर्भीक भ' मँगने रहैक
राजा रामसँ जवाब
आ जखन तथाकथित भगवानकेँ नहि सुझल रहैक
कोनो उचित जवाब
त' म्यानसँ तरुआरि निकालि शंबूकक गरदनिकेँ
कएने रहैक आर-पार

जनैत छहक शंबूकक की रहैक अपराध?
सुनबह त' एकदमसँ अमानवीय, अतार्किक आ
घृणित बुझना जेतह

ब्राह्मणवादी षड़यंत्रक इतिहास
ओकरा पर दोष लगाओल गेल रहैक जे
शूद्र शंबूकक तपस्याक कारणे मरि गेल रहैक
कोनो एगो ब्राह्मणक कुमार
जखनकि यथार्थ गप ई रहैक
ओ जीबैत भरि नहि कएने रहैक ब्राह्मणक
वर्चस्वकेँ स्वीकार
ताहि प्रतिशोधमे ब्राह्मणवादी सभ बनौने रहैक
ओकरा अपना षडयंत्रक शिकार

मुदा तोरा माथमे नहि घुसतह ई गप
तोँ दलित नेताक नाम पर बनल रहह ठक।

हम नहि मानैत छी पितृपक्ष

हे हमर पुरखा लोकनि
हम नहि मानैत छी पितृपक्ष
आ नहि करैत छी श्राद्ध
कियैक तँ हमरा बुझल अछि
ई अछि पूराक पूरा अंधविश्वास
पोंगा-पंडितक पाखण्ड
ओ अपन दान-दक्षिणा आ खाइ-पीयैक लेल
रचने अछि षडयंत्र

जहाँ धरि अछि
अहाँ सभक प्रति श्रद्धा आ सम्मान
त' पितृपक्षे धरि कियैक?
हम त' अहाँ लोकनिकेँ देने छी
सदिखन अपना हियामे स्थान
हमरा नहि करबाक अछि जौ-तिल-कुशसँ
फूसिऔका विधि-विधान

गीता आ वेद कहैत छैक पुनर्जन्मक बात
गरुड़ पुराण आ ब्रह्मवैवर्त पुराणकेँ मानू त'
मुइलाक उपरान्त लोक बनि जाइत छैक भूत-पिशाच
विरोधाभाससँ भरल छैक धर्मशास्त्र
हम स्वर्ग-नर्क, भूत-प्रेत आकि पुनर्जीवनक चक्करमे पड़ि
नहि करय चाहैत छी अपन मतिभ्रम
यथार्थक धरातल पर हमरा एकदमसँ
अवैज्ञानिक आ अतार्किक बुझना जाइत अछि ई तर्पण

जतेक शास्त्र, ततेक बात
एहि परिप्रेक्ष्यमे सही कहने छथिन कबीर दास
मुइल गाय नहि खा सकैत अछि घास
आ कौआ नहि भ' सकैत अछि मनुक्खक बाप!

गाँधीजीक बानर

ओ छथि तथाकथित दलित साहित्यकार
मुदा दलित, शोषित, वंचितक हक-अधिकारसँ
नहि रहलनि हुनका कहिओ कोनो सरोकार
जखन कि ओ लिखि सकैत छलाह क्रांति
उठा सकैत छलाह
दलित-दमित, शोषित-वंचितक आवाज
मुदा मंच-माला-पागक स्वार्थमे
बनल रहला चाटूकार
पुरस्कार-सम्मानक लोभमे
नहि फोलला अपन बकार
आँखि रहितो बनल रहला आन्हर
जेना होथि अनमन गाँधीजीक बानर।

ओकरा नहि छैक अपना पर भरोस

ओकर दोष एतबे छैक
जे नहि छैक ओकर मिसिओ भरि दोष
मुदा हरेक अपराधक बाद
ओकरा साबित कएल जाइत छैक कसूरवार
ओकरा संग सदिखन षड़यंत्र करैत रहैत छैक
धर्म-समाजक ठिकेदार
हरेक जुलूसमे ओकरा पकड़ा देल जाइत छैक
पार्टीक झंडा
साम्प्रदायिक दंगामे ओकरे थम्हाओल जाइत छैक
धर्मक धूजा
आ फेर भीड़क हिंसामे ओकरे कएल जाइत छैक
शिकार
आ ओकरे पर लगाओल जाइत छैक
हत्याक आरोप
अपराधी साबित भ' जाइत छैक निर्दोष
ओकर दोष एतबे छैक
जे ओकरा नहि छैक अपना पर मिसिओ
भरि भरोस।

चाहक दोकान पर दलित-विमर्श

सरजुग राम नहि छथि पढ़ल-लिखल
मुदा अकाट्य रहैत छनि हुनकर तर्क
एहि छुट्टीमे गामक चाहक दोकान पर
मिलला भिनसरे पहर
आ हाल-समाचारक बाद
गप-सपमे शुरू क' देलाह दलित-विमर्श
भाय यौ, पहिने हम सभ उठबैत छलियैक म'र
त' लोक कहैत छल अछूत
मुदा जखन जातिक दबावमे
हम सभ म'र उठेनाइ क' देलियैक बन्न
त' आब अपन-अपन माल-महीषक म'र उठबैत अछि
बाभनो-राजपूत
मुदा तइयो अछि ओ सभ उच्च
हमरा नहि बुझबामे अबैत अछि
ई जाति-पातिक सूत्र
तइपर बजलाह बिन्देसर सदाय
साँच गप्प कहला पर खिसिया जेबहक सरजू भाइ
बात खाली म'र उठेनाइ भरिक नइ हइक
तोँ सभ पहिने खाइतो छलहक म'र
खौंझाइत बाजल सरजुग
हौ हम तोरा गपसँ छिअ सहमत
मुदा तोरे टोलामे दुद्धा वैष्णव ह' कतेको सदाय
त' कि ओ मुसहर सँ बाभन भ' जेतैक बिन्देसर भाइ
हौ खाय-पियै, पहिनय-ओढ़यकेँ नहि हइक'
बात हइक' हमरा तोरासँ पुजबाबयकेँ
सेवा-टहल करबाबयकेँ

आइ जँ ओ नहि लगौने रहित' भेद-भावक लड़ाइ
त' हमहुँ-तोहूँ आदमी आ ओहो आदमी
तखन फेर हम-तोँ नीच आ ओ ऊँच
कोना हेतैक बिन्देसर भाइ
तइपर, हमरा करय पड़ल सरजुग रामक समर्थन
कहय पड़ल सरजुग ठीक कहैत छह बिन्देसर भाइ
कियो फूसि बजैत छह जे जाति आ वर्णक
कर्म छैक आधार
ई त' जनमिते सटि जाइत छैक
मनुक्खक कपार।

अपना देशक संसद

अपना देशक संसद ठक-बेइमानक अड्डा अछि
भ्रष्टचारी लेल बुझू त' ई साक्षात् गंगा अछि

काला धन उज्जर केनाइ एकर मुख्य धंधा अछि
एतयसँ शुरूआत बुझू सभ तरहक दंगा अछि

गलत नीतिक कारण एकर देशक विकास मंदा अछि
आम आदमी त्रस्त, एकर सदस्य सभ चंगा अछि

जनतंत्रक ई मंदिर आब बुझू बड़ गंदा अछि
एकर चालि-चलन देखिकऽ लजाइत अपन तिरंगा अछि।

पथिक छी

पथिक छी मुदा नहि बुझल अछि हमरा
गंतव्य स्थान
नहि अछि कतहु ठौर-ठेकान
बस चलबाक जिद्द
आगू बढ़बाक जिद्द
नहि करय दैत अछि कनिको विश्राम

नहि कियो संगी
नहि कियो संघाती
बाट सेहो अछि एकांत
चलल जा रहल छी अपना धुनिमे
ई मानि जे चलब जिनगी थिक
आ ठहरब मृत्यु समान

अनजान बाट
उनटा बसात
चलबामे अवरोध करैत अछि ठाढ़
मुदा पथिक हेबाक कर्तव्यक बोधसँ
सभ विघ्न-बाधाकेँ क' लैत छी पार

ओना कहिओ काल थाकि-ठेहिआक'
भ' जाइत छी उदास
टूटि जाइत अछि आगू बढ़बाक साहस
पीछा मुँहे घुरबाक सेहो अबैत अछि विचार
मुदा ई हैत हमर हार
ई विचार अबिते चलय लगैत छी झटकारि

जानि ने कत' ल' जाएत हमरा ई अनजान बाट
मंजिल धरि पहुँचाओत आकि कतहु
बीचहिमे भसियाओत
तकर कनिको चिंता नहि अछि हमरा
हम निश्चिंत छी
यात्रा निरर्थक नहि जाएत
असफलता किछु ने किछु सिखाएत
सफलता मंजिल धरि पहुँचाएत।

कायरक बस्ती

ई कायरक बस्ती छैक भाइ
एतय निर्भीक आदमीकेँ रहबाक नहि छैक अधिकार
जँ कियो सुनत इंकिलाब-जिंदाबाद
त' लगा देल जायत
अहाँक अभिव्यक्तिक आजादी पर प्रतिबंध
देशद्रोहीक कानूनमे फँसाक'
चलाओल जायत अहाँ पर अभियोग
सच्च पर रहितहुँ अहाँ अपनाकेँ
नहि सिद्ध क' सकैत छी निर्दोष

जँ एहि बस्तीमे रहबाक अछि
त' स्वीकार' पड़त कायरक संस्कृति
त्यागय पड़त अपन पुरुषार्थ
अन्याय-अत्याचार देखिओ क'
अहाँ नहि उठा सकैत छी प्रतिरोधक आवाज
एतय जी-हुजूरीक छैक रीति-रिवाज

एहि बस्तीक लोककेँ क्रांति नहि छैक पसिन
एकरा सभक संगे अहाँकेँ कहय पड़त
दिनकेँ राति आ रातिकेँ दिन
जँ कायरता अछि स्वीकार
त' एतय मिलि जायत सभ हक-अधिकार
आ जँ धिक्कारैत अछि अहाँक अपन पुरुषार्थ
त' छोड़ू एहि बस्तीकेँ
आ ने त' फेर जान तरहत्थी पर राखि
करू क्रांतिक शुरुआत।

अपना लोकसँ दूर छी हम

अपना लोकक बीच रहिओक'
अपना लोकसँ बड़ी दूर छी हम
कारण, अपन सिद्धान्त आ विचारसँ मजबूर छी हम
हम नहि क' सकैत छी समझौता
अपना अभिव्यक्तिक आजादीसँ
आ ने जड़ताकेँ ठहरा सकैत छी जायज
सामाजिक न्याय लेल प्रतिबद्ध हम
जाति-पाति आ वर्ण व्यवस्थाकेँ
कोना ठहरा सकैत छी जायज
अपन आत्म-स्वाभिमानसँ मजबूर छी हम
अपना लोकसँ बड़ी दूर छी हम

हँ, अपना लोकसँ बड़ी दूर छी हम
कियैक लोक पाखण्ड-आडम्बर पर प्रहारकेँ
बुझैत छैक अपराध
दलित-विमर्श पर प्रश्न पूछब छैक महापाप
तर्कशीलताकेँ लोक अनुशासनहीनता कहैत छैक
आ मूढ़ताकेँ बुझैत छैक विश्वासक पात्र
एतय हरिणकेँ अपन इतिहास लिखब मनाही छैक
आ शिकारी पढ़बैत छैक अहिंसाक पाठ
दलित, शोषित, वंचितक साहित्य लिखबा लेल
मजबूर छी हम
अपना लोकसँ बड़ी दूर छी हम।

हम स्वयंकेँ भुला गेल छी

जहियासँ लिखय लगलहुँ कविता
हम नहि रहलहुँ हम
हमर व्यक्तित्वमे सम्मिलित भ' गेल अछि
मारिते रास दुखित-व्यथित, शोषित जन
आब अपन सुखसँ खुश नहि होइत छी हम
आ ने रहैत अछि अपना दुख-तकलीफक कनिको गम
जेना ई जिनगी क' देने छियैक
दोसरा सभकेँ प्रति समर्पित
तहिना अपना व्यक्तिगत स्वार्थ, इच्छा, आकांक्षासँ
मोह भ' गेल अछि भंग

कवि बताह होइत छैक
पहिने सुनबामे लगैत छल अनसोहाँत
मुदा जहियासँ लिखय लगलहुँ कविता
बुझना जाइत अछि कहयबला
कहने छथिन बिलकुल साँच
एसगरोमे मतछिन्नू जकाँ गुनधुनाइत रहैत छी
देह रहैत अछि कतहु आ हम कल्पना संगे
सौंसे दुनियाँ बौआइत रहैत छी

अन्याय-अत्याचार देखि मोनमे
उठैत रहैत अछि आक्रोश
ककरो दुख-तकलीफमे देखिक'
चुबि जाइत अछि आँखिसँ नोर
काहि-कलह, घृणा-उन्मादसँ
आहत होइत रहैत अछि हमर भावना

बढ़ैत हिंसा-अपराधसँ
व्यथित होइत रहैत अछि हमर संवेदना
सदिखन करैत रहैत छी
मानव कल्याण लेल कल्पना
लिखैत रहैत छी
प्रेम, विश्वास, शांति, सौहार्द्र, सद्‌भावना

अपना भरि कोशिश रहैत अछि हमर
हमरा कवितामे होइ
'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'
मुदा एहि कवि-कर्ममे
हम स्वयंकेँ भुला गेल छी भाइ।

हत्यारा बनल भगवान

दू सभ्यता, दू संस्कृतिक बीच
वर्चस्वक लड़ाइकेँ लोक कहैत छैक
देवासुर संग्राम
जे मारल गेल ओ असुर-राक्षस
आ हत्यारा घोषित भ' गेल भगवान
एहि गप्पकेँ सिंधुघाटी सभ्यताक बादक
इतिहास स्पष्ट दैत छैक प्रमाण
वैदिक, उत्तर वैदिक कालमे
मुँह, हाथ, जाँघ आ पैरसँ
जनमय लगलै इन्सान
आ एतयसँ शुरू भेल छैक
छूत-अछूत, ऊँच-नीच सन
भेद-भावक सिद्धांत

हम के छी?
बड़ मुश्किल प्रश्न छैक एखुनका समयमे
मुदा अपना-अपनीकेँ सभ मानैत अछि
हम छी बड़का विद्वान
हिन्नू होयबाक गर्व छैक ओकरो
जकरा बाप-पुरखाकेँ नहि छैक
हिन्नू धर्मशास्त्रमे हाशियो पर स्थान
अपन अस्मिताक बोध नहि रहबाक कारणे
लोक बनल अछि मनुवादक मानसिक गुलाम
ब्राह्मणवादक भ्रमजालमे फँसि ओ
अपना पुरखाक हत्याराकेँ मानि रहल अछि भगवान
अंधश्रद्धा समाप्त क' देने छैक

लोकक तर्क-वितर्कक शक्ति
कूपमंडुक बनाक' रखने छैक अंधभक्ति
अंधविश्वास नहि रहय देने छैक
सही-गलत पहिचानबाक बोध
निर्गुण, निराकार, परबह्मकेँ छोड़िक'
कपोल-कल्पित फूसिऔका भगवानकेँ
पूजि रहल सभ कोइ।

धन्यवाद लार्ड मैकाले

हे हमर पुरखा सभ
किछु दिन आर प्रतिक्षा करू
अहाँ सभक सपना जरूर हैत साकार
सपना जे अहाँ देखने रहिएक
प्रेमक, सिनेहक, भाइचाराक
अपन आत्म-सम्मानक
अपना बाल-बच्चाक नैतिक-सामाजिक उत्थानक
आ जनकल्याणक
ओ सभ सपना होइबला अछि सच्च
अहाँक धिया-पुता सभ लेने अछि संकल्प

धन्यवादक पात्र अछि लार्ड मैकाले
जे केलाह आधुनिक शिक्षाक शुरूआत
आब हम सभ जाइत छी इसकुल
प्राप्त अछि शिक्षाक अधिकार
हरेक जोर-जुलुमक विरोधमे लिखैत छी इंकिलाब
एखन दू सए बर्ख नहि पुरलैए
आधासँ बेसी ध्वस्त क' चुकल छी
घृणा-विद्वेषक देबाल
आ बहुत जल्दीए एहि देबालकेँ गिराक
पूरा क' देबैक साफ
हम सभ सामाजिक न्याय लेल
लगातार क' रहल छी प्रयास

पढ़ला-लिखलासँ हमरा सभमे जागल अछि
बौद्धिक चेतना

भेल अछि वैज्ञानिक सोचक विकास
आब हम सभ बुझैत छी फूसि आ साँच
आब नहि जनमतैक मुँह-हाथ, जाँघ-पैरसँ मनुक्ख
आब नहि कियो हेतैक जन्मसँ अछूत

हे हमर पुरखा लोकनि
हमरा सभक कोशिश रहत
जे आब नहि मरैक कियो निर्दोष शंबूक।

बस! आब बहुत भेल

बस! आब बहुत भेल
बहुत भेल धर्म आ संस्कृतिक नाम पर
अन्याय-अत्याचार
प्राचीन मान्यता आ परम्पराक नाम पर
आर्थिक आ सामाजिक शोषण
बहुत भेल आब जाति-पातिक नाम पर
मिथ्या दोषारोपण

आब उबि गेल अछि जी
अहाँक धर्म आ धर्मशास्त्रसँ
आब घृणा भ' रहल अछि हमरा
स्वयंकेँ आस्था आ बिसवाससँ
जकरा रत्ती भरि पसिन नहि क' सकैछ
सभ्य समाज
ओ खिस्सा-पिहानी अछि
अहाँक धर्मक आधार
अहाँक एहेन कोनो देवता नहि अछि
जे नहि कएने हेताह हिंसा आकि बलात्कार

अहाँक वर्ण-व्यवस्था शुरू कएने अछि
हमर बर्बादीक इतिहास
अहाँक बनाओल जाति-प्रथासँ हम
भोगि रहल छी
अदौ कालसँ संताप

मनुक्ख होइतो मनुक्खक अनुभूति पर
प्रश्न खड़ा कएने रहल अहाँक बनौलहा

रीति-रिवाज
उद्यमी रहितो कंगाल बनाक' छोड़ि देलक
अहाँक षड़यंत्रकारी विशेषाधिकार

मुदा आब हमरा सत्यसँ
भ' गेल अछि साक्षात्कार
अहाँक धार्मिक, सामाजिक
फूसिक मान्यता आ परम्पराक
हम क' रहल छी परित्याग।

लड़ैत रहब लड़ाइ

जाधरि अहाँ अपना बरोबरि हमरा नहि
समझब भाइ
ताधरि हम अहाँक संगे लड़ैत रहब
विचारधाराक लड़ाइ

हम चलैत छी महात्मा बुद्धक बताओल
अहिंसाक रास्ता
अहाँक तीर-धनुष, तरुआरिबला भगवानमे
नहि अछि हमरा मिसिओ भरि आस्था
हमरा धर्मसँ बेसी महत्वपूर्ण
मनुक्खता बुझना जाइत अछि भाइ
समता, सद्भावना, भाइचारा स्थापित करबाक लेल
हम लड़ैत रहब लड़ाइ

हम नहि मानैत छी अहाँक धर्म आ धर्मशास्त्रकेँ
हम मानयबला लोक छी संत कबीर आ रविदासकेँ
ब्राह्मणवादक चक्करमे पड़ि नहि व्यर्थ करब
हम अपन खून-पसेनाक कमाइ
पाखण्ड, आडम्बर, अंधविश्वासक विरोधमे
हम लड़ैत रहब लड़ाइ

हम पढ़ैत छी फूले-पेरियारकेँ
हम बुझैत छी अहाँक धर्मक कारोबारकेँ
वैज्ञानिक सोच बौद्धिक चिंतनसँ हैत
हमरा सभक भलाइ
अहाँक वर्ण-व्यवस्थाक विरोधमे

हम लड़ैत रहब लड़ाइ
हम भारतीय संविधानकेँ मानयबला लोक छी
हम डाक्टर अंबेडकरक सिद्धांत पर चलयबला लोक छी
हम अधिकारक गप्प पर समझौता किन्नहुँ नहि करब भाइ
धर्म, वंश, जाति, लिंग आकि जन्म-स्थानक
आधार पर भेदभावक विरोधमे
लड़ैत रहब लड़ाइ।

पूर्णिमाक चान

नित पूर्णिमाक राति
हम निहारैत छी चान
चाहे भीड़-भाड़मे रही वा रही एकांत
चाहे बादल लागल होइक आकि फूजल आसमान
हम निहारिएटा लैत छी चान

जानि ने कियैक पूर्णिमाक चानसँ
हमरा प्रेम अछि अथाह
ओ सुन्नर अछि कि दगाह
ताहिसँ कोनो माने-मतलब नहि राखि
हम पूर्णिमाक चान देखबाक लेल
बनि जाइत छी बताह

ओना नान्हिटामे दादी सुनबैत छलीह
चन्ना मामाक बहुते रास खिस्सा-पिहानी
अँगुरीक इशारा क' हँसिक' कहैत छलीह
ओतय गाछ तर बैसि चरखा काटि रहल अछि
अहाँक बुढ़िया नानी
चन्ना मामा आरे आबह... कहि
खियाबैत छलीह दूध-भात
सुतबै लेल चन्ना मामाक लोरी गाबि
नहुँ-नहुँ ठोकैत छलीह हमर गात

मुदा ताहूसँ नहि छी
नित इजोरिया रातिमे हम चान देखबाक लेल अभ्यस्त
हँ, पूर्णिमाक चान देखबाक लेल
हम जरूर लेने छी संकल्प

एक दिन अगहन आकि पूसक पूर्णिमाक राति
चन्ना मामाकेँ घेरने वृत्ताकार घेराकेँ देखबैत
कहने रहथि हमर दाइ
'बौआ, एहि धरती परहक लोक मुइला उपरांत
चलि जाइत छथिन आसमान
वैह सभ सभा लगौने काते-काते बैसल छथिन
आ बीचमे बैसल छथिन चान भगवान'
आ हम अबोध पूछि लेने रहिए—
'दाइ मुइला उपरांत तहुँ चलि जेबहीं आसमान'
दादी हमर गाल चूमि बड़ प्यार आ दुलारसँ
कहने रहथि—
'हँ हौ बौआ, हमरो हेतैक यैह ठेकान'

जखन कि आब हम बुझैत छियैक
दादीक गप्प छलैक पूराक पूरा अंधविश्वास
कियैक जे जकरा ओ कहैत छलखिन चानक सभा
ओकरा 'होल ऑफ मून' कहैत छैक खगोल-शास्त्र
मुदा नहि जानि तइयो किएक दादीक मृत्यु उपरांतसँ
हुनका प्रति श्रद्धा आ सम्मानमे
हम निहारैत रहैत छी पूर्णिमाक चान
दादीक छविकेँ करैत धिआन!

बौआ तोँ हार नहि

बौआ तोँ हार नहि, उठबाक प्रयास कर
जीतय लेल सहय पड़तौ थोड़े बहुत-दुख दर्द
सफर एखन बाँकी छौक, हिम्मति नहि हार तोँ
विघ्न-बाधा देखिकेँ नहि हारिकेँ स्वीकार तोँ

थाकि-हारिक' बैसि नहि, दुन्ना उत्साह कर
दम लगाक' दौड़, अपन सपना साकार कर
उभड़-खाभड़ देखिकेँ अपन रास्ता बदल नहि
जिद्द पर ठाढ़ रह, अपन लक्ष्यसँ भटक नहि

भीड़ देखिकऽ बाउ तोँ एना नहि उदास हो
हारि-जीतक चिंतासँ एतेक नहि हताश हो
एना नहि विचलित भ' भूल अपन कर्तव्य-पथ
कठिन परिश्रमक बौआ नहि छैक दोसर विकल्प

किछु नहि मोसकिल एतय ई गप्प हमर जानि ले
जीतबाक अछि हमरा बस मोनमे तोँ ठानि ले
भाग्य भरोसे रह नहि, सदिखन कर्तव्य कर
जँ मोनमे बिसबास छौ त' छूबि लेबें सर्वोच्च शिखर।

कतय जा रहल अछि अपन देश

आइ 26 जनवरी 2024 छैक
आइएक दिन 1950मे लागू भेल रहय
अपन भारतीय संविधान
हरेक बर्ख जकाँ एहू बेर छैक
देशमे राष्ट्रीय उत्सवक वातावरण
हमरो स्टेशन पर अछि झंडोत्तोलनक कार्यक्रम
जयबाक अछि हमरो
देबाक अछि अपन देशक झंडाकेँ सम्मान
गयबाक अछि राष्ट्र-गान
करबाक अछि स्वतंत्रता आन्दोलनक
महान विभूति सभक गुणगान

मुदा एखन बाँकी अछि समय
ताधरि रेलवे क्वार्टरक बरामदामे
बैसल छी एकांत
देखि रहल छी सड़क पर स्कूलक बाल-बुतरू सभकेँ
जे अपना-अपनीकेँ स्कूलक ड्रेस पहिरने
लगा रहल अछि प्रभात-फेरी
सुनि रहल छी डीजे पर एकसँ-एक देशभक्ति गीत
मुदा देशक वर्तमान स्थिति देखिक'
मोने-मन उठि रहल अछि खीझ

कतय जा रहल अछि अपन देश
राजनेता सभ खेला रहल अछि
जाति-पाति, धर्म-मजहबक खेल
लोकतंत्रक पहरेदार देशक मीडिया

बनल अछि सत्ताक चाटूकार
भूख, गरीबी, बेरोजगारी आ महगाइ पर
एकर हरण भ' गेल छैक बकार
राति-दिन मचौने रहैत अछि
हिन्दू-मुसलमान, त' भारत-पाकिस्तान पर गर्दमिसान
अपना भरि ई कोनो कसरि नहि छोड़य चाहैत अछि
देशक मुख्य मुद्दासँ भटकाबय लेल
आम आदमीक धिआन

संविधानक ठीक विपरित भ' गेल छैक
किछु लोकक सिद्धांत
ओ आइओ मानैत अछि मनुए संहिताकेँ
अपन विधान
सम्पूर्ण-प्रभुत्व संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष
लोकतंत्रात्मक गणराज्य ओकरा नहि छैक पसिन
ओ धर्म आधारित राष्ट्र लेल
षड़यंत्र रचैत रहैत अछि राति-दिन
यैह कारण अछि जे ओ देशक बंधुता पर
करैत रहैत अछि कुठाराघात
समानता त' ओकरा किन्नहुँ नहि छैक स्वीकार
ओहि वर्चस्ववादी संस्कृतिक पोषक लोककेँ
अदौ काल जकाँ आइयो चाही
सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक क्षेत्रमे
विशेषाधिकार

बात-बात पर आहत भ' जाइत छैक
ओकर धार्मिक भावना
छल-प्रपंच, ठकपनी, फूसि-फटकसँ जुड़ल छैक
ओकर संवेदना
ओ सच बाजयबलाक जीह काटय लेल

घोषित क' दैत छैक करोड़ोक इनाम
विचार, अभिव्यक्ति, बिसबास, धर्म आ उपासना
स्वतंत्रता तककेँ
ई मुट्ठी भरि मनुवादी लोक
बनाक' राखय चाहैत अछि अपन गुलाम
जाहि कारणे एहिमेसँ किछु तथाकथित लोक
स्वयंकेँ घोषित कएने अछि भगवान
आस्था-बिसबासक नाम पर ओ चला रहल अछि
अपन पाखण्ड-आडम्बरक दोकान

देशक विडम्बना छैक जे
एक्कैसम सदीक भारतमे लोक एखनो
बौद्धिक चिंतन आ वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ बेसी
अंध-बिसबास आ चमत्कार पर क' रहल अछि बिसबास
धर्मांध सभ अवरुद्ध करय चाहैत अछि देशक विकास
आ सत्ता सेहो अछि एकरा सभक पक्षमे ठाढ़
कियैक त' सत्ताकेँ बुझल छैक
धर्मांध व्यक्ति नहि क' सकैछ
देशक समस्या पर सत्तासँ सवाल
मुदा जागि रहल छैक नबका पीढ़ी
पहिचानि रहल छैक अपन हक-अधिकार
घृणा-विद्वेषक राजनीति करय बलाक
शनैः-शनैः समाप्त भ' रहल छैक जनाधार
मनुवादी व्यवस्थाक फूजि रहल छैक पोल
एकजुट भ' रहल छैक संविधानमे
आस्था राखयबला सभ लोक
एक ने एक दिन अबस्स सफल हेतैक
सामाजिक न्यायक लड़ाइ
एहि आस आ बिसबासक संग हम दैत छी
सभ गोटेकेँ गणतंत्र दिवस केर हार्दिक बधाइ!

मनुक्ख बनबाक प्रयास

नहि, हम नहि जाइत छी मंदिर
आ नहि करैत छी पूजा-प्रार्थना पर विश्वास
माटिक मूर्तिमे आस्था नहि अछि हमरा
हम मनुक्ख बनी, सैह रहैत अछि हमर प्रयास

धर्म आ धर्मशास्त्र बँटैत छैक मनुक्खकेँ
हिन्नू-मुसलमान, सिख-ईसाईमे
फलाँ जाति, फलाँ सम्प्रदायमे
आ मनुक्खता सिखबैत छैक
सभ धर्म-पंथक लोक छी भाइ-भाइ
तेँ हम नहि मानैत छी कोनो धर्म
आ नहि पढ़ैत छी धर्मशास्त्र
हम मनुक्ख बनी, सैह रहैत अछि हमर प्रयास

ईश्वर छैक आकि नहि, तकर नहि छैक कोनो प्रमाण
हमरा लेल माय-बाप आ गुरुजनक चरण अछि चारूधाम
दुखित-पीड़ितक सेवा-सत्कार करयबला
हमरा बुझना जाइत अछि भगवान
बाँकी तीर्थ-व्रत-स्नान सभ अंधविश्वास
हम मनुक्ख बनी, सैह रहैत अछि हमर प्रयास

हम नहि मानैत छी स्वर्ग-नर्क-पुनर्जन्म
अपन कर्मसँ राखय चाहैत छी सभकेँ प्रसन्न
तर्क-वितर्क आ वैज्ञानिक समझ अछि हमर जीवनक आधार
हम आँखि मुनि नहि क' सकैत छी फूसिकेँ स्वीकार
हमरा समझसँ होम-जापसँ नहि भ' सकैछ

मनुक्ख उद्धार
मानवक कल्याण लेल जरूरी छैक सत्य-अहिंसाक बाट
हम मनुक्ख बनी, सैह रहैत अछि हमर प्रयास

हमरामे एखनो अछि ईर्ष्या-द्वेष, छल-प्रपंच
हमरा अनेरो भ' जाइत अछि
कहिओ काल अपना पर घमंड
गप्प-गप्पमे देखैत छी हम अपन स्वार्थ-लिप्सा
हमरामे नहि आयल अछि एखन धरि मनुक्खता
हम अपन अवगुण खोजि करय चाहैत छी सुधार
हम मनुक्ख बनी, सैह रहैत अछि हमर प्रयास।

भुला गेल छी हम

एहि भीड़मे आबिक' हेरा गेल छी हम
पएरा देखल अछि तइयो भुला गेल छी हम

चूक गामेमे भेल जे नहि कयलहुँ विचार
अचक्केमे चलि एयलहुँ शहर अनचिन्हार
देखिकऽ शहरक व्यवहार ठकुआ गेल छी हम
पएरा देखल अछि तइयो भुला गेल छी हम

नीके गामे छलहुँ, भेलहुँ फूसिओ हरान
एतय भरल छैक चारू दिस भ्रष्ट आ बइमान
सभकिछु जनितो जेना ठका गेल छी हम
पएरा देखल अछि तइयो भुला गेल छी हम

नाम-सम्मानक चाहमे छोड़ि देलहुँ गाम
एतय रोजे करैत अछि लोक हमर अपमान
किछु बनयकेँ सोचिक' गड़बड़ा गेल छी हम
पएरा देखल अछि तइयो भूला गेल छी हम

ककरा अपन कहू, सभकियो बुझैत अछि आन
एहि शहरमे नहि अछि हमर अपन समांग
घर कोना आब जाएब, घबरा गेल छी हम
पएरा देखल अछि तइयो भुला गेल छी हम।

गाम अपन एतेक सुनसान अछि कियैक

भाइ यौ, गाम अपन एतेक सुनसान अछि कियैक
मौगी भरल अछि, मरद दुतियाक चान अछि कियैक

ई अछि हमरा-अहाँक दोख, वोट दैत छियैक निधोख
जाति देखिक' नेता चुनब त' गामसँ एहिना भागत लोक
फेर कल-कारखाना लेल एतेक हरान छियैक कियैक
मौगी भरल अछि, मरद दुतियाक चान अछि कियैक

समस्या अछि बड़ गम्भीर, अपन सरकार अछि बहीर
भावनात्मक मुद्दा छोड़ि विकासक मुद्दा पर होउ थीर
सोचू अपन जन्मभूमिकेँ छोड़ि आन ठाम छी कियैक
मौगी भरल अछि, मरद दुतियाक चान अछि कियैक?

अपन गाम चल रौ मीता

शहरमे नहि छौक किछु जान आब रौ मीता
चल छोड़ि दिल्ली, अपन गाम चल रौ मीता

माय-बापकेँ छोड़िक' आब मोन नहि लगैत छौक
सुतली रातिमे अक्सरहेँ गामक यादि अबैत छौक
घरहि पर रहिक' कोनो काम करब रौ मीता
चल छोड़ि दिल्ली, अपन गाम चल रौ मीता

बड़का छौड़ा फोनमे जखन ई गप्प कहैत छौक
बाबू एबह कहिआ घरे, बुझ आत्मा कानैत छौक
छोटकी बेटीमे बसैत छौक प्राण हमर रौ मीता
चल छोड़ि दिल्ली, अपन गाम चल रौ मीता

पाइक लोभमे मीता बुझ जिनगी छौक व्यर्थ रौ
घर-परिवार, बाल-बुतरू बिनु जिनगीक की अर्थ रौ
आंग-समांग भेला पर के काम देतौ रौ मीता
चल छोड़ि दिल्ली, अपन गाम चल रौ मीता

शहरक व्यवहार देखि किछु नहि फुराइत छौक
सभ छौक मशीन बनल, नहि कियो दुख-सुख बतियाइत छौक
गामक पाकड़ि बला चबूतरा केर धिआन कर रौ मीता
चल छोड़ि दिल्ली, अपन गाम चल रौ मीता।

स्वांतः सुखाय

हमरा अकादमीक पुरस्कारक लोभ नहि अछि
जे कोनो पार्टी पौलिटिक्सक लेल लिखी साहित्य
हमरा मंच-माला-पागक आसक्ति नहि अछि
जे गाबी मनुवादी सभक चारण गीत
साहित्य हमरा लेल अछि स्वांतः सुखाय
दलित, दमित, शोषित, वंचित लोकक
दुख-तकलीफ, हक-अधिकार लिखिक'
मोन प्रफुल्लित भ' जाइत अछि भाइ।

जागै जाइ जा हौ

हँ, हम जागि रहल छी
एहि निःशब्द, निसोदंड रातिमे
देखि रहल छी संसारक सभ गतिविधि
अन्याय, अत्याचार, अपराध
हरेक जुर्मक विरोधमे करैत रहैत छी गर्जना
इंकिलाब-जिंदाबाद
मुदा सुतली रातिमे नहि कियो सुनैत अछि
हमर आवाज

तइयो लहास बनल निसभेर सुतल लोककेँ
करैत रहैत छी रखबारी
'जागै जाइ जा हौ' कहि बेर-बेर
करैत रहैत छी किलोल
सावधान करैत रहैत छी देशक लोककेँ
'हौ एहने निसोदंड रातिमे अबैत छैक चोर'
मुदा जानि ने लोक सभकेँ के कहि देने छैक
'ई छैक स्वर्णकाल'
एहेन समयमे नहि होइत छैक
चोरी, डकैती आ लुटपाट'
आ एहि स्वर्णकालक भ्रममे लोक काटि रहल अछि
नम्हर-नम्हर फोंफ
जेना अदौ कालसँ निनबासल अछि
हमरा देशक लोक

आ ओम्हर
'निर्मोहिया गाबैए गीत हौ 'कोइ नै जाने'
गाबि चोरबा

तरे-तरे काटि रहल अछि सँइन
खींचि रहल अछि बोराक बोरा
क' रहल अछि एहि कोठीक धान ओहि कोठी
आ जे किछु जागल लोक अछि त' ओ
चोरबाक गीतक भावसँ अनजान
ओकरे सुरमे सुर मिलबैत भरि रहल अछि तान
आ हम खिसिआएल भनभना रहल छी मोने-मोन
सुतल रहै जाइ जा कुम्भकर्णी निन्नमे
जखन हेतह विहान
तखन बुझै जाइ जइहक अपना-अपनीक नोकसान।

षड़यंत्र

हम कतेको नीक कियैक नहि लिखि ली कविता
कविजी हमरा कविताकेँ नहि पढ़ता-गुणता
हमरा प्रति पूर्वाग्रहसँ ग्रसित छनि
हुनकर मानसिकता
छोट जाति, ओहूमे अछोप
जानि ने के द' देलकै एहि राड़-रोइया सभकेँ
कलम पकड़बाक छूट
वर्जितो क्षेत्रमे जाइत अछि घुसि

जतय-ततय पसारि लैत अछि अपन टाँग
नीक-बेजाय केर नहि छैक एकरा सभकेँ
मिसिओ भरि भान
सभ भाषाक साहित्यसँ पवित्र छल
हमर मैथिली साहित्य
आब ओकरो कएने जा रहल अछि अपवित्र

मुदा हमर सोच अछि हुनकासँ विपरीत
ओ जकरा कहैत छथिन पवित्र
हम ओकरा मानैत छियैक गंदगी
जड़ता, अन्धविश्वास, पाखण्ड
क्षेत्रीय आ जातीय वर्चस्व कायम रखबाक लेल
मैथिली साहित्य संगे एगो बड़का षड़यंत्र
जे रोकि रहल छैक मैथिली साहित्यक क्षेत्र-विस्तार
आधुनिक-वैश्विक आ तर्कशील चिंतनक अभावमे
संकीर्ण भेल जा रहल छैक मैथिली साहित्यक विचार
खैर ओ हमरा पढ़ता आकि नहि पढ़ता
ताहिसँ हमरा नहि पड़ैत अछि कोनो फर्क

मुदा मैथिली हमरो मातृभाषा अछि
आ हम अपना मातृभाषासँ गन्दगी मेटेबाक लेल
लेने छी संकल्प।

जिबैत व्यक्ति

मुर्दा वैह भरि नहि छैक
जे भ' गेल छैक निष्प्राण
मुर्दा त' ओहो छैक
जकर मरि गेल छैक स्वाभिमान
जे चुपचाप सहि जाइत छैक अपमान
अन्याय-अत्याचारक विरोध
कुव्यवस्थाक प्रति विद्रोह
ई सभ होइत छैक एगो जिबैत व्यक्तित्वक पहिचान
ओना त' मुर्दाकेँ सभसँ बेसी प्रिय होइते छैक अपन जान
ई डर-भयक व्याधि लेने जीवनपर्यंत जीबैत रहैत छैक
ई जीबाक लेल पल-पल मरैत रहैत छैक
एहेन व्यक्ति सदिखन रहैत छैक
यथास्थितिवादक पक्षमे ठाढ़
परिवर्तनक नाम सुनिक' एकरा ध' लैत छैक
जाड़-बोखार

मुदा जिबैत व्यक्ति मरबाक लेल
निर्भीक भ' जाइत छैक
'मृत्यु शाश्वत सत्य थिक'
ई गप खूब नीकसँ बुझैत छैक
ई जीवनपर्यंत करैत रहैत छैक इंकिलाब
ई बुलंद करैत रहैत छैक हरेक जुर्मक
विरोधमे अपन आवाज
एकरा अपना स्वार्थसँ बेसी प्रिय होइत छैक
गरीब-गुरबाक, शोषित-पीड़ित जनक हक-अधिकार
ओना त' अपना स्वार्थ लेल
लहास बनल लोको उठिक' भ' जाइत छैक ठाढ़!

यै, सुनू प्रिय

यै, सुनू प्रिय! हमर हृदयक धड़कन
हमरा अन्तर्मनमे अहींटा छी
अहींटा छी हमरा साँसोमे
हमरा रोइयाँक कण-कणमे अहींटा छी

हमरा हृदयमे जे बहैत अछि, भाव छी अहाँ
हम जे लिखैत छी ओ बात छी अहाँ
अहाँ हमर सुन्नर कल्पना छी
अहाँ हमर कलमक प्रेरणा छी

अहाँ रहैत छी हमरा चितवनमे
हमर स्वप्न-यथार्थक हरेक क्षणमे
हम जे लिखैत छी ओ स्मृति छी अहाँ
हमरा कविताक सभ पंक्ति छी अहाँ

अहाँ भूत, भविष्य, वर्तमान हमर
दुख-सुखमे संग देनिहार हमर
अछि अहींसँ हमर अस्तित्व बँचल
अछि अहीं निमित्ते पहिचाने मिलल

सच कही त' अहाँ हमर जिनगी छी
नहि रहब हमरासँ कहियो अलग
हमरा समस्या सभक निदान अहाँ
हम देह त' हमर जान अहाँ।

हमरा गामक बरमोतरक बाध

सोचैत छी कहिओ हम अपना गामक
बरमोतर बाधक आड़ि पर बैसि लिखी एगो कविता
कवितामे होइक ओहि बाधक माटिक सोन्हगर सुगन्धि
कवितामे होइक किसान-मजूरक पसेनाक गन्ह
कवितामे होइक बाधमे भरल सगतोरनी आ
घसबहिनीक चर्च
ऋतु होइक वसन्त
सिहकैत होइक फगुनहटिक पछिया बसात
आ एहि बसातक संग झूमैत होइक
आड़ि-धूर पर राहड़िक गोछ
फूलायल होइक सरिसोक पीयर-पीयर फूल
कविता लिखाय त' ओहि बाधक अनुकूल

भागम-भाग जिनगी आ अन्ध प्रतियोगितासँ बड़ी दूर
आरोप-प्रत्यारोप, आक्रोश-प्रतिरोधसँ हटिक'
ओहि प्राकृतिक वातावरणमे ली हम चैनक साँस
अपन पुरखाक अरजल ओहि बाधक
छह कठबा खेतक आड़ि पर बैसि एकान्त
आ लौटि जाइ अपना नेनपनमे
यादि करी ओहि बाधसँ जुड़ल
अपना नेनपनक एक-एकटा दृश्य
जाहिसँ नहि रहय किछु चिन्ता-फिकिर
आ फेर प्रफुल्लित मनसँ लिखी हम कविता

कवितामे लिखी हम खेत-खरिहानक गप्प
कवितामे लिखि हम मजूर-किसानक दुख-दर्द
ऋतु वसन्तोमे करी हम बरखा ऋतुक कल्पना

कल्पनामे सिहकैत होइक पुरबइया शीतल बसात
मेघ बरसैत होइक मूसलाधार
धान रोपैत जन-मजूर गाबैत होइक बरहमासा
आ नांगट-उघार बाल-बुतरूक झुण्ड
आड़ि-धूरमे गोंजारैत होइक डोका
कवितामे लिखी हम महुआ, गहुँम, धान
कवितामे लिखी हम किसान-मजूर होइत छैक
साक्षात् भगवान

कवितामे लिखी हम चैत-बैसाखक दुपहरिआक
किसानक सहानुभूति
कविता राखैक पूसक अधरतियामे अपना खेतक
ओगरबाही करैत किसानक संग सहानुभूति
आ एहि स्वानुभूति-सहानुभूतिक बीच
बाँचल रहय हमरा कवितामे बाधक प्रकृति
ताहि लेल हम ओहि आड़ि पर बैसिक'
निहारय चाहैत छी डूमैत सुरुजक सुंदर दृश्य
ओहि आड़ि पर बैसि हम सुनय चाहैत छी
चरबहाक मुँहसँ लोरिक-सलहेसक कर्णप्रिय गीत
ओहि आड़ि पर बैसिक'
हम लोकसँ कहय चाहैत छियैक
बिनु प्रकृति प्रेमसँ नहि छैक मनुक्खक अस्तित्व।

अर्थक अनर्थ

सुनैत छहक बौधु
ओकर सभक बहस
अपना पुरखाकेँ बचबय लेल
कोना करैत छैक अर्थक अनर्थ
हौ ताड़न माने सर्वविदित छैक
आघात-प्रहार, डाँट-डपट
आ हमरा-तोरा गोल-गोल घुमाबय लेल
रचि रहल छह एकसँ-एक कुतर्क
हौ, साहित्यमे जे बजैत छैक पात्र
ओ होइत छैक लेखकक अपन निजी विचार
मुदा ओ नदी-बसात, पशु-पक्षीक बकार कहि
हमरा-तोरा बनबैत छह मूर्खाधिराज
हौ आबहु जागह
पहिचानह ओकर षड़यंत्र
हमरा-तोरा पर अपन वर्चस्व स्थापित
करबाक लेल
धर्मग्रंथक नाम पर लिखने छह पाखण्ड।

हमर इच्छा

विध्वसंक विरोधमे सदति बुद्ध बनि
ठाढ़ रहय हमर कविता
हमरा अपना कवितासँ एतबा अछि इच्छा
ने नाम, ने सम्मान
आ ने अपन गुणगान
किछु ने चाहैत छी हम
काहि-कलह, ईर्ष्या-घृणा, द्वेष-उन्मादक समय
कबीर आ नानक बनि लोककेँ दैत रहैक
सदभाव आ प्रेमक शिक्षा
हमरा अपना कवितासँ एतबा अछि इच्छा

धर्म-मजहब, जाति-पाति, पंथ-सम्प्रदाय
किछु नहि मानैत छी हम
मानव छी, मानवताक अतिरिक्त किछु नहि
जानैत छी हम
क्षमा, दया, सत्य, अहिंसा सन
मानवीय मूल्यसँ सदैव सिक्त रहय हमर कविता
एकटा कवि होयबाक नाते
यैह अछि हमर प्रथम आ अन्तिम इच्छा।

ई कविता लेल चुनौतीपूर्ण समय अछि

कवि जी कलम उठाउ
ई कविता लिखबाक लेल
चुनौतीपूर्ण समय अछि
एहि प्रतिकूल समयमे होइत छैक
असली आ नकली कविक पहिचान
ई स्व-निर्णय लेबाक लेल स्वर्णिम समय अछि
एहि समयमे अहाँ अमर भ' जाएब
आ नहि त' कलंकक टीका लगाएब
विकल्प अछि
प्रेम-विश्वास, शान्ति-सौहार्द्र आ
सद्भावनाक दीप जराउ
आ नहि त' घृणा, उन्माद, ईर्ष्या-द्वेषक अन्हारमे
गुम भ' जाउ

जँ असली कवि छी
त' अपन उत्तरदायित्वक बोध करू
एखन अहाँक जरूरति छैक देशकेँ
आ अहाँकेँ जरूरति अछि इंकिलाबी कविताक
इंकिलाबी कविता जे राष्ट्रवाद आ अंधराष्ट्रवादक
भ्रमजाल हटबैत होइक
इंकिलाबी कविता जे धर्म आ धर्मान्धमे
फरक समझबैत होइक
इंकिलाबी कविता जे सत्तासँ करैत होइक सवाल
गरीबी-भूखमरी, बेरोजगारी-महगाइ पर
मणिपुरमे दूगो अबला पर भेल
बर्बर कार्रवाइ पर

इंकिलाबी कविता जे सत्ताकेँ करैत होइक सावधान
विरोधकेँ नहि परिभाषित कएल जाए विद्रोहमे
सच्च बाजय बलाकेँ नहि फँसाएल जाए देश द्रोहमे

कविजी एखन कलमकेँ चलय दियौ निर्बाध
सत्य पर बढ़ि गेल अछि फूसिक प्रभाव
धर्म क' रहल अछि मानवता पर अत्याचार
लोकतंत्रमे बढ़ि गेल अछि
लोकपर तंत्रक खतरा
संविधान पर दुष्ट लोकक अछि पहरा
एखन अहाँ कलमकेँ नहि दियौ विश्राम
नहि त' ओ देशकेँ बना देत पूँजीपतिक गुलाम।

कोरा बकवास

हौ भाइ बौधू
कहिओ पुछिअहक ओकरासँ
जे दैत रहैत छह स्वर्ग-नर्क, पुनर्जन्म पर
तोरा बड़का-बड़का ज्ञान
जे स्वर्ग प्राप्तिक नाम पर लैत रहैत छह तोरासँ
मोटगर-मोटगर दान
जे जखन हमरा सभकेँ मन्दिरमे प्रवेश कएला पर
अपवित्र भ' जाइत छथि भगवान
तखन ओ हमरा सभकेँ
कोना द' सकैछ देवलोकमे (स्वर्ग) स्थान?
आ जँ स्थान मिलिओ गेल त'
मिलत उचित सम्मान
आकि शुद्र-अछूत कहि ओतहु हैत अपमान?

पुछिअहक ओकरासँ
की बड़का-बड़का टीक राखयबला
चानन-ठोप कयनिहार अहाँक पुरखा लोकनि
जे जिनगी भरि करैत रहला
दलित-दमित, शोषित-वंचित लोकसँ घोर घृणा
की मुइला उपरांत हुनकर सभक हियामे जागि गेलनि करुणा
जे भ' गेलाह स्वर्गमे शूद्र-अछूत संग रहबाक लेल तैयार
आकि अहाँ ठकबाक लेल
करैत छी फूसिक कारोबार?

हमरा विश्वास अछि
जे ओ नहि द' सकैछ उचित जवाब
स्वर्ग-नर्क-पुनर्जन्म छैक एकदमसँ कोरा बकवास।

हम मानव छी मानवता लेल

जखन मानवता हमर उद्देश्य अछि
तखन धर्मक बन्हनमे कोना रही
समता लेल संघर्षशील हम
कोनो जातिक वर्चस्व कोना सही

राम-रहीमक झगड़ामे
हम मानवतावादी लोक कियैक पड़ी
प्रेम-विश्वास, सद्भावक संग
हम सत्य-अहिंसाक बाट चली

पाप-पुण्य आ धर्म-अधर्ममे
हम ने कखनो फँसी
शुद्ध आचरण, नैतिक कर्मसँ
कोशिश करी रहय साफ छवि

पूजा-पाठ, यज्ञ-उपवास पर
हम ने कहिओ विश्वास करी
रहय हियामे क्षमा, दया, करुणा
यैह सदिखन प्रयास करी

भाग्य-भगवानसँ बेखबर हम
ने स्वर्ग-मोक्षक चाह करी
दुखित-व्यथितकेँ ईश्वर मानि
ओकरे सेवा-सत्कार करी।

जय भीम

जय भीम मात्र अभिवादनक शब्देटा नहि छैक
जय भीम स्त्री-दलितक मुक्तिदाता
भारतक संविधान निर्माता
विश्वरत्न डॉ. बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकरक
प्रति सादर सम्मान छैक
शोषित-वंचित वर्गक स्वाभिमान छैक
जय भीम दलित आंदोलनक जान छैक
जय भीम मुक्ति-संग्राम छैक

जय भीम मात्र एगो शब्दे नहि, अंगार छैक
अन्याय-अत्याचारक प्रतिकार छैक
गरीब-गुरबाक हक-अधिकार छैक
जय भीम पाखण्डवादक बहिष्कार छैक

जय भीम दलितक क्रांतिक प्रमुख नारा छैक
जय भीम एगो क्रांतिकारी विचारधारा छैक
जय भीम मानसिक गुलामीसँ छुटकारा छैक
जय भीम दलित-दमित, शोषित-वंचित लोकक
भावनात्मक सहारा छैक

जय भीम संघर्षक इतिहास छैक
जय भीम आत्मविश्वास छैक
जय भीम आडम्बर-अंधविश्वासकेँ नहि मानय बलाक
हिम्मति आर साहास छैक
जय भीम दलित-वंचितक चतुर्दिक विकास छैक

जय भीम असमानताक विरोधमे इंकिलाब छैक
जय भीम समाजिक बदलाव छैक

जय भीम दलित-वंचितक बुलंद आवाज छैक

जय भीम वैज्ञानिक सोच छैक
जय भीम बौद्धिक चेतना छैक
जय भीम दलितक प्रेरणा आ संवेदना छैक

जय भीम दलित आजादीक प्रतीक छैक
जय भीम शोषित-वंचितक स्वर्णिम भविष्य छैक।

खतरा अबस्स छैक

देश नहि छैक खतरामे
आ ने खतरामे छैक हिन्नू-मुसलमान
मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर
सभ छैक सुरक्षित
सुरक्षित छैक बाइबिल, गीता, कुरान
जाति-पाति, पंथ-सम्प्रदाय पहिनेसँ
मजगूत स्थितिमे छैक
आ आइयो देशमे खूब नीकसँ मनाओल जाइत छैक
होली आ रमजान

एकर मतलब ई नहि जे देशमे सभ किछु
सुरक्षित छैक
खतरा अबस्स छैक
शिक्षा, रोजी-रोजगार पर
आम आदमीक हक-अधिकार पर
खतरा छैक मानवता पर
प्रेम-भाइचारा बला आपसी रिश्ता पर
खतरा छैक भारतीय संविधान पर
देशक संसाधन आ संस्थान पर
महगाइ चढ़ि गेल छैक सातम आसमान पर
बस राजनीतिक षडयंत्रमे
असली गप नहि बुझि रहल छैक आम-अवाम!

हम नहि पूजैत छी पाथरक भगवानकेँ

कथी लेल पूजी हम पाथरक भगवानकेँ
जे हक-अधिकार भेटल अछि भारतीय संविधानसँ

कोनो भगवान नहि केलथि दलितक उत्थान
दलित उत्थान भेल अछि त' किछु व्यक्ति महानसे

धर्म-शास्त्र करैत रहल हमरा सभदिन अपमान
ई संविधानक देन अछि जे जीबैत छी सम्मानसँ

नहि चाही हमरा पंडा-पुरहितक आशीर्वाद
स्वस्थ छी हम एखनो त' विज्ञानक वरदानसँ

कबुला-पाती पर हमरा नहि अछि विश्वास
सफल होइत छैक व्यक्ति अपना कठिन कामसँ

काँवर उघलासँ नहि हैत कहिओ हमर उद्धार
हमर उद्धार हैत त' मात्र इसकूल-कॉलेजक ज्ञानसँ

ई चुप रहब ठीक नहि अछि

निष्पक्षता कलंक अछि भाइ
जखन कियो दोसर लड़ैत अछि
अहाँक हिस्साक लड़ाइ
तटस्थता साबित क' रहल अछि
अहाँमे नहि अछि हिम्मति आ सहास
अहाँ छी एकदमसँ जियैत लहास
आ सज्जनताक अढ़मे अहाँ बुझना जाइत छी
अपना समाजक एक नम्बरक धोखेबाज

अपमानक घोंट पीबैत अहाँ ढोंग करैत छी
हम छी बड़का समझदार
कायर बनि लुटाइत देखैत छी
अपन हक-अधिकार
गुलाम बनि उघैत रहैत छी निठल्ला विचार
आ अबूझ-अनजान बनि सहैत रहैत छी
सभ तरहक दुराचार

ई चुप रहब, जुर्म सहब ठीक नहि अछि भाइ
किछु बाजू, प्रतिरोध करू
अन्याय-अत्याचारक विरोध करू
आ जँ ई सभ किछु ने क' सकैत छी
त' कमसँ-कम लड़ै बलाक सहयोग करू।

चलल जा रहल छी निर्बाध

जिनगीक बाट पर
हम चलल जा रहल छी निर्बाध
रस्तामे बहुत किछु छूटल जा रहल अछि
किछुसँ बहुत प्रेम अछि
त' किछुसँ घोर घृणा
मुदा घृणा आ प्रेम सेहो कहाँ रहैत छैक स्थाइ
समय पर दोस्त दुश्मन
आ दुश्मन दोस्त बनि जाइत छैक
यैह छैक एहि दुनियाँक सच्चाइ
फेर कियैक ककरोसँ ईर्ष्या-द्वेष
कथी लेल ओतेक माया-मोह
नहि मिलनक प्रसन्नता
नहि विछोहक सन्ताप
जिनगीक बाट पर
हम चलल जा रहल छी निर्बाध

चलब जिनगीक प्रकृति छैक
आ दुख-सुख मात्र जिनगीक प्रवृति
जन्म-मरणक परिधिमे घुमैत रहैत छैक
ई सृष्टि
फेर ककरासँ डर
आ कथी पर घमंड
संतोष-आनंदसँ भरल अछि हमर मोन
नहि भविष्यक चिन्ता
नहि भूतक पश्चाताप
चलब हमर वर्तमान अछि

जिनगीक बाट पर
हम चलल जा रहल छी निर्बाध

जड़ता मृत्यु थिक
आ मृत्यु थिक शाश्वत सत्य
तखन मृत्युसँ पहिने हम कियैक मरब
कियैक चुपचाप अन्याय सहब
जाधरि चलैत अछि साँस
ताधरि करैत रहब गलतक विरोध
सत्यक मार्ग जिनगीक बाट आसान करत
से पूरा अछि भरोस
तखन कथी लेल छल-प्रपंच
कथी लेल ककरोसँ विश्वासघात
जिनगीक बाट पर
हम चलल जा रहल छी निर्बाध।

बेटाक लेल

बाउ रौ, आगि नहि मिझाए दिहेँ अपन प्रतिरोधक
सच्चक लेल लड़िहेँ, तोँ डरिहेँ नहि मुँहजोरसे
स्वार्थवश नहि जीबिहेँ, सहयोग करिहेँ कमजोरकेँ
सम्मान नहि भेटैत छैक कहिओ समाजमे मुँहचोरकेँ
अभिव्यक्ति नहि कमजोर करिहेँ अपन आक्रोशकेँ
अन्यायक प्रतिकार करिहेँ खूब जोर-शोरसे
एकलव्य जकाँ बाउ रौ फेरामे नहि फँसिहेँ द्रोणक
सम्मान नहि करिहेँ कहिओ भ्रष्ट-बेइमान घुसखोरक।

धर्मक धन्धा

सोचैत छी एकबेर हम धर्मक व्यापार करी
मानवता पर जोर-जुल्म अत्याचार करी

छैक धर्मक धन्धामे बड़ फायदा
घृणा-विद्वेष हिंसाक हम कारोबार करी

धार्मिक व्यक्तिकेँ लोक दैत छैक बड़ सम्मान
राम-रहिम आशाराम जकाँ खूब व्यभिचार करी

दंगा करबाक' लोक बनलैए सत्ताधीश
सामुहिक हत्याक एकबेर हम विचार करी

धर्मसँ बड़ पैघ होइत छैक मनुक्खता
व्यंग्यकेँ सच्च मानि नहि अहाँ स्वीकार करी

उधारक धर्म-संस्कृति

हौ भाइ बौधु
कहिओ एसगरमे करिह' विचार
अपना सभक विकासक सभसँ पैघ
दुश्मन बुझना जेतह
उधारमे लेल अनकर संस्कृति आ संस्कार

हम-तोँ फूसि पर करैत छहक विश्वास
फूसिए छैक अपना सभक श्रद्धा-भक्तिक आधार
हम-तोँ अपना पुरखाक शहादत दिवस पर
मनाबैत छहक उत्सव
आ अपना पुरखाक हत्याराकेँ बुझैत छहक भगवान
उधारक संस्कृति नहि हुअ देलकह कहिओ
अपन अस्मिताक असली पहिचान
कपटी धर्म बन्न कएने रहलह चेतनाक द्वार
कूपमंडुक बनाक' रखने रहलह अनकर संस्कार

हम-तोँ नहि बुझलहक कहिओ इतिहास-भूगोल
विज्ञानक यथार्थ
सभदिन आँखि मूनि करैत रहलक
मनगढ़ंत किस्सा-पिहानी पर विश्वास
हमरा-तोरा फुटली आँखिए नहि सोहेलह
महात्मा बुद्धक सत्य-अहिंसा, प्रेम आ सद्भावना
अपना सभक विश्वासक आधार बनल रहलह
फूसि, हिंसा आ घृणा

हमरा-तोरा पाखण्ड-आडम्बरक कीच-कादोसँ
निकालबाक प्रयास करैत-करैत
थाकि गेलाह कबीर-नानक-रविदास

मुदा पोंगापंथी धर्म-दर्शनक चक्करमे पड़ि
हम-तोँ हुनके सभकेँ उड़बैत रहलहक उपहास
अपन भलाइ चाह'बला फूले-पेरियार
आ अम्बेडकर अपना सभकेँ बुझना भेलह
विधर्मी आ धर्म-भ्रष्ट
हम-तोँ नहि बुझलहक उधारक धर्म-संस्कृतिक षड़यंत्र

हम-तोँ दुश्मनकेँ बुझैत रहलहक अपन
आ अपनकेँ आन
तखन अपना सभकेँ कोना हेतह उत्थान
ओना उधारक व्यापारी त' चाहिए रहल छह
हम-तोँ बनल रहिएक ओकर सभदिन
मानसिक गुलाम।

चलिहेँ बौआ बाबा भीमक सिद्धान्त

बाउ रे, हमर गप्पकेँ रखिहेँ धिआन
चलिहेँ आजीवन बाबा भीमक सिद्धान्त
तीर्थ-व्रत कएलासँ नहि हेतौक कल्याण
पढ़बें-लिखबें त' बनबें महान
नहि ढोइहें काँवड़, नहि पीहें गाँजा-भाँग
कूपमंडूक बना देतो ब्राह्मणवादी विधान
इंसान लेल धर्म छैक नहि कि धर्म लेल इंसान
नहि मानिहें ओहि धर्मकेँ जे करौ तोहर अपमान

आत्म-सम्मान लेल पढ़िहें बौआ भारतक संविधान
वेद-ग्रंथ बना देतौ मानसिक गुलाम
पोंगा-पंडितक गप्प पर नहि करिहें बिसबास
स्वर्ग-नर्क-पुनर्जन्म छैक कोरा बकवास
सभसँ बड़का धर्म छैक बौआ सेवा-सद्‌भावना
रखिहें हीयामे सदिखन मानवता केर भावना
भाग्य आ भगवानमे नहि करिहें बिसबास
लगन-मेहनति आ संघर्षसँ सुतारिहें अपन काज

जोगने रहिहें मोनमे सदिखन वैज्ञानिक चेतना
पाखण्ड-आडंबर-अंधबिसबासकेँ करैत रहिहें भर्त्सना
मनुवाद पर करिहें बौआ कसगर प्रहार
तखनहिं मिलतौ समानताक अधिकार
'अप्प दीपो भवः' छैक हरेक भ्रमक उपाय
मंदिरमे व्यर्थ नहि करिहें अपन मेहनतिकेँ कमाइ
बाबा भीम जकाँ तोहुँ पहिनिहें सूट-पैंट आ टाइ
शोषित-वंचितक हक-अधिकार लेल लड़ैत रहिहें लड़ाइ।

जातिगत जनगणना

मूसक संख्या देखि बिलाड़ शुद्ध शाकाहारी भ' गेलै
छलै शोणितक कारोबार, आब अहिंसाक पुजारी भ' गेलै

जातिगत जनगणना ठीके बहुते जरूरी छलैक
सभकेँ अपन-अपन ओकातिक जानकारी भ' गेलै

हिन्नू-मुसलमान कहि जे लड़बैत छल पहिने सभकेँ
आब ई जाति-पाति ओकरो पर बड़ भारी भ' गेलै

जनसंख्या अनुपाते आब बँटैतै सभ अधिकार
आब पच्चासीओकेँ पच्चासी पर दावेदारी भ' गेलै

जाति बनाबय बला स्वयं अछि जातिसँ फिरिसान
ई जाति-पाति देशक लेल बड़का बेमारी भ' गेलै।

मैथिली

मिथिलामे रहनिहार सभक जुबान छै मैथिली
कोनो एक जातिक नहि गुलाम छै मैथिली

कियो मैथिलीकेँ बना देने छै पागक पर्याय
कियो मुरेठा बान्हि भरैत अछि ओ तान छै मैथिली

कियो मैथिलीकेँ कहिओ बनौने रहय चारण गीत
ककरो अपन पुरखाक शौर्यगान छै मैथिली

कियो सुनबैत अछि देवताकेँ संस्कृतक छंद-मंत्र-श्लोक
ककरो गहबरक पूजाकेँ विधि-विधान छै मैथिली

मैथिली पर नहि छैक कोनो एक धर्मक स्वत्वाधिकार
बहुतो मुसलमान भाइक कलाम छै मैथिली

कियो स्वार्थ लेल चलबैत अछि मैथिलीक दोकान
'परार्थी'क कलमक निस्वार्थ अभियान छै मैथिली।

डरे डेरायब नहि

हम डरे डेरायब नहि, साहित्यसँ पड़ायब नहि
अहाँक फूसि गप्प पर हम हँ-मे-हँ मिलायब नहि

मानलहुँ साहित्यमे भरल अछि अहाँक समांग
भेड़िया-धसान भीड़ देखि हम घबरायब नहि

हम अम्बेडकरवादी छी, लड़ब विचारधाराक लड़ाइ
गोडसे जकाँ कोनो गाँधी पर गोली चलायब नहि

शोषण-असमानता पर बुलन्द करैत रहब आवाज
पुरस्कार-सम्मानक लोभमे चारण-गीत गायब नहि

अहाँ घोषित करय चाहैत छी हमरा अपन शागिर्द
मुदा हम एकलव्य जकाँ अपन औंठा कटबायब नहि

हम मानैत छी सदिखन 'अप्प दीपो भव'क सिद्धान्त
कपोल-कल्पित देवताकेँ हम किन्नहुँ गोहरायब नहि।

झाझा एक्सप्रेस

झाझा एक्सप्रेस बताह बनल
अन्हरायल दौड़ल जा रहल अछि गति-सिमानक पार
ई नहि देखैत अछि लाल-हरियर संकेत
ई रोक आ वेगक संकेत पर सेहो नहि दैत अछि धिआन
बतहा ट्रेन अन्हरायल दौड़ल जा रहल अछि अविराम

रेलवेक सभ नियमकेँ करैत तार-तार
सीटी-फाटक पर नहि दैत अछि हॉर्नक आवाज
आ नहि होइत अछि कोनो सावधानीक संकेतसँ सावधान
स्टेशन मास्टरक हाथक झंडीकेँ करैत अपमान
बतहा ट्रेन अन्हरायल दौड़ल जा रहल अछि अविराम

सनकी नियंत्रकक आदेश पर
नवसिखुआ डरेबर झाझा एक्सप्रेसक बढ़ा देने अछि
अनियंत्रित वेग
आ ट्रेन-प्रबंधक अछि अपन उतरदायित्वक बोधसँ अनजान
बतहा ट्रेन अन्हरायल दौड़ल जा रहल अछि अविराम

लाइनमे ठाढ़ अछि बहुतो सुपरफास्ट एक्सप्रेस
ई राजधानी आ शताब्दी एक्सप्रेससँ बुझैत अछि
अपनाकेँ विशेष
एहि बतहा ट्रेनक चलते बहुतो रेलक कर्मचारीकेँ
दिअ पड़लैक अपना पदसँ रिजाइन
आ ई एखनहुँ रेलवक व्यवस्थामे
उत्पन्न क' रहल अछि भारी व्यवधान
आब काँटा-बिन्दु पर ल' जाक'
एकरा बेपटरी केनाइये अछि एकर अन्तिम परिणाम।

ओ एक नम्बरक शैतान छै

ओ धर्मक मामिलामे बड़ कट्टर इन्सान छै
ओकरामे कनिको नहि मानवता केर ज्ञान छै

ओ पूजा-पाठमे अपन समय करैत अछि खराब
ओकरा हियामे नहि करुणा आ मुँहमे राम छै

चानन-ठोप कएने ओ बुझैत अछि अपनाकेँ संत
ओकरामे एखनो धरि जाति-पातिक गुमान छै

ओ शोषित-वंचितक प्रति रखैत अछि घृणा केर भाव
तइयो मानसिक गुलाम कहैत छैक गिरहत महान छै

ओकरा वेद-ग्रन्थ सभ छैक मुँहजुबानी यादि
मुदा समताभावक अभावमे ओ बेंगक समान छै

एहने विद्वान सभ करैत अछि मानवता केर नोकसान
साम्प्रदायिक सद्भावना बिगाड़ब ओकर मुख्य काम छै

'परार्थी' विद्वानक भेषमे अछि ओ एक नम्बरक शैतान
ओकरे सनक विद्वानक चलते आइ धर्म लहूलुहान छै